माध्यमिक स्तर

हिन्दुस्तानी संगीत

प्रयोगात्मक (242)

2

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आईएसओ 9001 : 2000 प्रमाणित

(मा.सं.वि.मं. भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था)

ए-24-25 इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201301 (उ. प्र.)

वेबसाइट : www.nios.ac.in टोल फ्री नं. - 18001809393

सलाहकार समिति

- अध्यक्ष
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा
- निदेशक (शैक्षिक)
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

पाठ्यक्रम समिति

- प्रो. कृष्णा बिष्ट *(अध्यक्ष)*
  (सेवानिवृत्त)
  पूर्व संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष
  संगीत एवं ललित कला विभाग,
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. (स्व.) राकेश बाला सक्सेना
  एसोसिएट प्रोफेसर,
  संगीत विभाग श्यामाप्रसाद मुखर्जी कॉलेज
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. मधुबाला सक्सेना
  प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
  पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत एवं नृत्य विभाग
  कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
  कुरूक्षेत्र, हरियाणा
- डॉ. मल्लिका बनर्जी
  एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
  इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सुनीरा कासलीवाल व्यास
  प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष
  संगीत एवं ललित कला संकाय
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. रिचा जैन
  पूर्व सहायक प्रोफेसर,
  भारती कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. कमलेश बाला सक्सेना
  एसोसिएट प्रोफेसर, (सेवानिवृत्त)
  विभागाध्यक्ष संगीत विभाग
  गोकुलदास स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
  बरेली (उ. प्र.)
- श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
  वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी एवं पाठ्यक्रम समन्वयक
  रा.मु.वि.शि. संस्थान, नोएडा

पाठ लेखक एवं गायक कलाकार

- डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी
  प्रोफेसर, संगीत एवं ललित कला विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री राकेश पंडित
  शास्त्रीय गायक
  दिल्ली
- श्रीमती अंतरा चक्रवर्ती
  गायक कलाकार,
  दिल्ली
- डॉ. इरा मुखर्जी
  ध्रुपद गायक, दिल्ली
- डॉ. बृजभूषण गोस्वामी
  ध्रुपद गायक, ऑल इंडिया रेडियो
  दिल्ली
- डॉ. रबीन्द्र प्रताप सिंह
  कंपोजर और वोकलिस्ट
  दिल्ली
- डॉ. मल्लिका बनर्जी,
  एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
  इग्नू, दिल्ली
- डॉ अर्नव चटर्जी
  शास्त्रीय गायक
  दिल्ली
- श्री विकास पोंदानी
  शास्त्रीय गायक
  दिल्ली
- डॉ. सुरेश गंधर्व
  शास्त्रीय गायक,
  ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली
- श्री भरत शर्मा
  गायक कलाकार,
  दिल्ली
- श्रीमती रिता मेथ्यू
  संगीत शिक्षिका एवं गायक कलाकार
  दिल्ली

सहायक कलाकार

- श्री प्रदीप चटर्जी
  वाद्य शिक्षक,
  डी.पी.एस., रोहिणी, दिल्ली
- श्री गुलशन कुमार
  तबला वादक, दिल्ली
- डॉ. सुनील गोस्वामी
  तानपुरा वादक,
  दिल्ली
- श्री जाकिर धौलपुरी
  सिंथेसाइजर, दिल्ली
- श्री राज कुमार
  परकसन वादक, दिल्ली

संपादक मंडल

- प्रो. कृष्णा बिष्ट
  (सेवानिवृत्त)
  पूर्व संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष
  संगीत एवं ललित कला विभाग,
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्रीमती श्रावणी बहुगुणा
  संगीत शिक्षिका
  आर.एम. आर्या कन्या
  उच्च माध्यमिक विद्यालय
  कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
- डॉ. रिचा जैन,
  पूर्व सहायक प्रोफेसर, भारती कॉलेज
  दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी
  प्रोफेसर, संगीत एवं ललित कला विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सुभाष रानी चौधरी
  सेवानिवृत्त,
  प्रधानाचार्य, गर्वमेंट कॉलेज
  फरिदाबाद, हरियाणा

अनुवादक

- डॉ रिचा जैन
  पूर्व सहायक प्रोफेसर
  भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
  दिल्ली
- श्रीमती श्रावणी बहुगुणा
  संगीत शिक्षिका
  आर.एम. आर्या कन्या
  उच्च माध्यमिक विद्यालय
  कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

डी.टी.पी. कार्य

शिवम् ग्राफिक्स, रानी बाग दिल्ली-110034

विषय-सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	छोटा ख्याल	
	(क) राग–यमन	1
	(ख) राग–भैरव	5
	(ग) राग–भूपाली	8
	(घ) राग–अल्हैया बिलावल	11
	(ङ) राग–काफी	14
2.	ध्रुपद	
	(क) राग–यमन	19
	(ख) राग–भैरव	23
	(ग) राग–भूपाली	26
	(घ) राग–अल्हैया बिलावल	29
	(ङ) राग–काफी	32
3.	अलंकार	35
4.	तालों का वर्णन	38
5.	देश भक्ति गीत	
	(क) हिन्द देश के निवासी	44
	(ख) जय जन भारत	46
	(ग) तेरे चरणों में झुका माथ है	51
	(घ) चंदा जैसी धरा हमारी	57
	(ङ) सारे जहां से अच्छा	62
6.	लोक गीत	
	(क) गढ़वाली लोक गीत	66
	(ख) हरियाणवी लोक गीत	69
	(ग) पंजाबी लोक गीत	72
	(घ) बंगाली लोक गीत	75
	(ङ) छत्तीसगढ़ के लोक गीत	78
	(च) राजस्थानी लोक गीत	86
7.	राष्ट्रीय गीत एवं राष्ट्रगान	91
8.	पाठ्यक्रम	(i-iii)

1

छोटा ख्याल

(क)

राग-यमन

हिन्दुस्तानी संगीत पाठ्यक्रम के सिद्धांत के अंतर्गत पहले बताए गए विभिन्न विषयों, जैसे– राग, ताल, इनके तत्त्व, स्वर लिपि पद्धति इत्यादि का वर्णन अब प्रायोगिक भाग में किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में दिये गये रागों का आगे के पाठों में बंदिशों के उदाहरणों के माध्यम से एवं उनकी स्वरलिपि का वर्णन शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली के संदर्भ में आलाप तथा तान सहित एवं ध्रुपद शैली के संदर्भ में दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित किया जा रहा है। इन्हीं बंदिशों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दिये गये सी.डी. को सुनें।

राग यमन 'कल्याण' ठाठ से उत्पन्न राग है। यह एक अत्यंत प्रचलित राग है, जिसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध एक ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप एवं तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात् आप :

- राग यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया बिलावल एवं काफी के स्वरूप का वर्णन कर सकेंगे;
- ख्याल विधा के दिए गए रागों की बंदिश गा सकेंगे;
- ख्याल विधा के दिए गए ताल के बोलों का उच्चारण कर सकेंगे।

राग परिचय

ठाठ–कल्याण
गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
वादी–गंधार
संवादी – निषाद
जाति – सम्पूर्ण–सम्पूर्ण
सारे स्वर शुद्ध/, मध्यम तीव्र
आरोह – सा रे ग म॑ प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा
पकड़ – नि॒ रे ग रे सा, प म॑ ग, रे, सा

आरोह गाते समय निषाद से प्रारम्भ किया जाता है तथा पंचम वर्जित रखा जाता है।

टिप्पणी

राग-यमन

बंदिश

स्थायी

सदा शिव भजमना निस दिन
रिद्ध सिद्ध दायक विनत सहायक
नाहक भटकत फिरत अनवरत।

अंतरा

शंकर भोला पार्वती रमना,
सीत तपोनग भूषण अनुपम,
काहे ना सुमिरत भटकत तू फिरत।।

राग यमन - त्रिताल (16 मात्रा)

स्थायी

								नि	ध	–	प	मं	प	ग	मं
								स	दा	ऽ	शि	व	भ	ज	म
								0				3			
प	–	–	–	प	मं	ग	रे	नि़	रे	ग	रे	ग	मं	प	ध
न	ऽ	ऽ	ऽ	नि	स	दि	न	रि	ध	सि	ध	दा	ऽ	य	क
X				2				0				3			
प	मं	ग	रे	ग	रे	सा	ऽ	नि़	रे	ग	मं	प	ध	नि	सां
वि	न	त	स	हा	ऽ	य	क	ना	ऽ	ह	क	भ	ट	क	त
X				2				0				3			
रें	सां	नि	ध	प	मं	ग	मं								
फि	र	त	अ	न	व	र	त								
X				2											

अंतरा

								मं	ग	मं	घ	सां	–	सां	सां
								शं	ऽ	क	र	भो	ऽ	ला	ऽ
								0				3			

टिप्पणी

नि	रें	गं	रें	सां	नि	–	प	गं	ऽ	रें	सां	रें	–	सां	नि
पा	ऽ	र्व	ती	र	म	ना	ऽ	सि	–	त	त	पो	–	न	ग
X				2				0				3			
ध	–	प	म॑	ग	ऽ	रे	सा	नि़	रे	ग	म॑	प	ध	नी	सां
भू	ऽ	ष	ण	अ	नु	प	म	का	ऽ	हे	ना	सु	मि	र	त
X				2				0				3			
रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑								
भ	ट	क	त	तू	फि	र	त								
X				2											

आलाप स्थायी

सदाशिव भज मन निस दिन

	0				3				X				2			
1.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	नि़	रे	सा	–
2.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	म॑	–	रे	–	ग	–	–	–
	म॑	–	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
3.	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	म॑	–	–	–	ग	–	–	–
	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–
4.	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	म॑	–	ध	–	प	–	–	–
	प	म॑	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
5.	ग	–	म॑	–	प	–	–	–	म॑	ध	नी	ध	प	–	–	–
	म॑	–	ध	–	–	नि	–	–	म॑	ध	नी	ध	सां	–	–	–

अंतरा

शंकर ..... रमना

	O				3				x				2			
1.	म॑	–	ध	–	नि	–	–	–	म॑	ध	नी	ध	सां	–	–	–
2.	नि	–	रें	–	गं	–	–	–	गं	–	रें	–	नि	रें	सां	–

तानें

स्थायी

सदाशिव भज मना

	x				2			
(i)	नि़रे	गम॑	पध	निसां	निध	पम॑	गरे	साऽ

टिप्पणी

(ii)	नि़रे	गम॑	पध	निसां	|	पम॑	गरे	गरे	साऽ
(iii)	म॑ध	निसां	निध	पम॑	|	गम॑	पम॑	गरे	साऽ
(iv)	सांनी	धप	निध	पम॑	|	पध	पम॑	गरे	साऽ
(v)	गग	रेसा	नीनी	धप	|	सांनी	धप	म॑ग	रेसा

अंतरा

शंकर भोला

	x				2			
(i)	सांनी	धप	गम॑	रेसा	नि़रे	गम॑	पध	निसां
(ii)	नि़रे	गम॑	रेग	म॑ध	गम॑	धनी	म॑ध	नीसां

पाठगत प्रश्न 1.1

1. राग यमन के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. राग यमन का गायन समय क्या हैं?
3. यमन राग का आरोह-अवरोह लिखिए।

(ख)

राग भैरव (छोटा ख्याल)

यह राग भैरव ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसमें ऋषभ तथा धैवत स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की एक बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ– भैरव

गायन समय– प्रात:काल

वादी स्वर– धैवत

संवादी स्वर– ऋषभ

जाति– सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

ऋषभ एवं धैवत कोमल, बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं।

न्यास स्वर– मध्यम, मुख्य स्वर समूह गम रे सा।

आरोह	–	सा	रे,	ग	म,	प	ध,	नि	सां।
अवरोह	–	सां	नि	ध,	प	म,	ग	रे,	सा।
पकड़	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	प।	

राग भैरव (छोटाख्याल)

ताल - तीन ताल (16 मात्रा)

बंदिश

स्थायी:

धन-धन मूरत कृष्ण मुरारी
सुलच्छन गिरिधारी छवि सुंदर लागे अति प्यारी

अंतरा:

बंसीधर मनमोहन सुहावे
बलि-बलि जाऊँ मोरे मन भावे
सब रंग ज्ञान विचारी।।

टिप्पणी

भैरव स्वरलिपि:

स्थायी

म		नि				ग		ग				ग			
ग	म	ध	ध	पम	प	म	ग	रे	–	मग	(म)	रे	–	सा	–
ध	न	ध	न	मू ऽ	ऽ	र	त	कृ	ऽ	ष्ण ऽ	मु	रा	ऽ	री	–
0				3				X				2			
नि़	नि़							ग				सा		म	
सा	ध़	–	नि़	सा	सा	सा	सा	रे	–	सा	–	नि़	सा	ग	म
सु	ल	ऽ	च्छ	ऽ	न	गि	रि	धा	ऽ	री	ऽ	छ	बि	सुं	ऽ
0				3				X				2			
		नि		ध		नि									
प	प	ध	–	सां	–	ध	प	पध	निसां	सारें	सांनि	धनि	धप	मग	म
द	र	ला	ऽ	गे	ऽ	अ	ति	प्या ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

अंतरा

म				नि											
प	–	प	–	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	–
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न	मो	ह	न	सु	हा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			
सां		रें						नि				नि			
रें	रें	मं	मं	रें	–	सां	–	सां	सां	रें	सां	ध	–	प	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	मो	रे	म	न	भा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			
म						नि									
ग	म	ग	म	प	–	ध	प	पध	निसां	सारें	सांनि	धनि	धप	मग	म
स	ब	रं	ग	ज्ञा	ऽ	न	वि	चा ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

टिप्पणी

आलाप

धन धन मूरत कृष्ण मुरारी

	0				3				X				2			
1.	सा	–	–	–	ध	नि	सा	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
2.	सा	रे	ग	म	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
3.	ग	म	ध	–	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
4.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
	ग	म	ध	ध	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
5.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	नी	–	सां	–	–	–

अंतरा

बंसीधर मन मोहन सुहावे

(i)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	म	प	ध	नि	सां	–	–	–
(ii)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	गं	–	मं	–	रें	–	सां	–
	0				3				X				2			

स्थायी तान

धन-धन मूरत

	x				2			
(i)	सारे	गम	पध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ
(ii)	गम	पध	निसां	रेंसां	निध	पम	गरे	साऽ
(iii)	सारे	गम	पम	गम	पध	पम	गरे	साऽ
(iv)	साग	मप	गम	पध	निनि	धप	मग	रेसा
(v)	धनि	सारें	सांनि	धप	गम	धप	मग	रेसा

अंतरा

बंसीधर मन

	x							2				
(i)	सां	नि	ध	प	म	ग	रे सा	सा	ग	म	प	धनि सांऽ
(ii)	धनि		सारें		सांनि		धप	म	ग	म	प	धनि सांऽ

पाठगत प्रश्न 1.2

1. राग भैरव के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. राग भैरव की कौन-सी प्रकृति है?
3. राग भैरव का गायन समय क्या है?

(ग)

राग-भूपाली (छोटा ख्याल)

राग भूपाली कल्याण ठाठ से उत्पन्न हुआ है। यह बहुत ही आसान एवं मधुर राग है, जिसके आरोह तथा अवरोह दोनों में पांच स्वर हैं। अर्थात्, मध्यम तथा निषाद स्वर वर्जित हैं। अतः, इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में छोटा ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ – कल्याण

वादी स्वर – गंधार

सम्वादी स्वर – धैवत

गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति – औड़व-औड़व

राग भूपाली के वर्जित स्वर – मध्यम एवं निषाद

आरोह – सा रे ग, प ध, सां

अवरोह – सां ध प ग रे सा

पकड़ – ग, रे, सा, ध़, सा रे, ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश (छोटा ख्याल)

ताल – तीन ताल (16 मात्रा)

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

त्रिभुवन नायक बहुसुख दायक

बिलम करो मत हाली

टिप्पणी

अंतरा

अति उदार गत अगम निगम के
रसिकन के रस ख्याली
सिरी कमलापति बृज के वासी
कर खुशाल प्रतिपाली

स्वरलिपि

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–	सा	ध़	सा	रे	ग	–	ग	–
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ	त्रि	भु	व	न	पा	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			
प	प	प		प		सां		ध				ध	सां		
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
त्रि	भु	व	न	ना	ऽ	य	क	ब	हु	सु	ख	दा	ऽ	य	क
0				3				x				2			
ध				रें											
सां	सां	रें	रें	ध	–	सां	सां	पध	सारें	गरें	सांसां	पध	सांसां	धप	गरे
बि	ल	म	क	रो	ऽ	म	त	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			
रे															
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–								
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ								
0				3											

अन्तरा

ग					ध										
प	प	ग	प	–	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–
अ	ति	उ	दा	ऽ	र	ग	त	अ	ग	म	नि	ग	म	के	ऽ
0				3				x				2			
ध	सां							ध				ध			
सां	सां	ध	ध	सां	–	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	ध
र	सि	क	न	के	ऽ	र	स	ख्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			

टिप्पणी

ध		ध		सां				प		प		ग			
प	ध	सां	सां	ध	–	प	प	ग	रे	ग	प	रे	–	सा	–
सि	रि	क	म	ला	ऽ	प	ति	बृ	ज	के	ऽ	वा	ऽ	सी	ऽ
0				3				x				2			
ध		गं													
सां	सां	गं	रें	–	सां	रें	सां	पध	सांसां	धप	पध	सांसां	धप	गरे	सा–
क	र	खु	शा	ऽ	ल	प्र	ति	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			

आलाप

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

	0				3				x				2			
1.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	सा	ध़	सा	–
2.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	प	–	–	–	ग	–	–	–
	प	–	ग	–	रे	–	–	–	सा	–	ध़	–	सा	–	–	–
3.	ग	रे	प	–	ग	–	–	–	ध	प	ग	रे	ग	रे	सा	–
4.	ग	रे	ग	–	प	–	–	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

अन्तरा

अति उदार गत अगम निगम के

0				3				x				2			
सां	–	–	–	सांध	–	सां	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

तान

स्थायी

दरशन दीजे

	x				2			
1.	सारे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
2.	सारे	गप	धसां	रेंसं	धप	गरे	गरे	सा–
3.	सारे	गरे	गप	गप	धसां	धप	गरे	सा–
4.	गरे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
5.	सारे	गप	धसां	रेंसां	रेंसां	धप	गरे	सा–

पाठगत प्रश्न 1.3

1. राग भूपाली का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
2. राग भूपाली के वर्णित स्वर कौन-से हैं।
3. राग भूपाली का गायन समय लिखिए।

टिप्पणी

(घ)

राग-अल्हैया बिलावल (छोटा ख्याल)

यह राग बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में कोमल निषाद तथा गंधार का वक्र प्रयोग है। इस राग का सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है। जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दीये गये सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

आरोह - सा रे, ग रे, ग प ध, नि ध नि सां

अवरोह - सा नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग रे, ग प, ध, नि सां

ठाठ - बिलावल

वादी - धैवत

संवादी - गांधार

जाति - षाड़व संपूर्ण

गायन समय - दिन का द्वितीय प्रहर

बंदिश

ताल - तीन ताल (16 मात्रा)

स्थायी

बलि बलि जाऊ मधुर सुर गाओ अबकि बेर मेरे
कुंवर कन्हैया नदं हि नाच दिखावो

अन्तरा

तारी दे दे अपने कर की परम प्रीत उपजावो
आन जौन्त धुन सुन डर पट कत मो भुज कंठ लगावो

स्वरलिपि

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
प		सां		प				म				म			
सां	सां	ध	प	ग	प	म	ग	रे	गम	प	मग	रे	–	सा	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊं	म	धु	रऽ	सु	रऽ	गा	ऽ	वो	ऽ
0				3				x				2			
नि								सा				सा			
सा	रे	ग	म	रे	सा	रे	सा	ध़	नि़	सा	नि़	ध़	नि़	ध़	प़
अ	ब	कि	बे	ऽ	र	मे	रे	कुं	व	र	कं	न्हैं	ऽ	या	ऽ
0				3				x				2			
प				प		प	ध								
ग	–	गम	रे	ग	प	नि	नि	सांसां	गरें	सांनि	धनि	सांनि	धप	मग	मरे
नं	ऽ	दऽ	ही	ना	ऽ	च	दि	खाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			
	स	.	स												
सां	सां	ध	प												
ब	लि	ब	लि												
0															

अंतरा

				ध											
प	–	प	–	नि	ध	नि	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
ता	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	क	र	की	ऽ
0				3				x				2			
												स			
सां	रें	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	नि	सां	–	ध	नि		प
प	र	म	प्री	ऽ	त	उ	प	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो
0				3				x				2			
			सां								ग				
धनि	सं	सां	ध	नि	प	मग	मरे	रे	गम	प	मग	म	रे	सा	सा
आऽ	ऽ	न	जौ	ऽ	न्त	धुऽ	नऽ	सु	नऽ	ड	रऽ	प	ट	क	त
0				3				x				2			
प		प		प			ध								
ग	–	ग	मरे	ग	प	नि	नि	सां	–	सांसां	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा
मो	ऽ	भु	जऽ	कं	ऽ	ठ	ल	गा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			

टिप्पणी

सां	सां	ध	प			
ब	लि	ब	लि			
0						

आलाप

बलि बलि जाऊं मधुर सुर गावो

1. - गरे ग प | ध नि ध - | - प - - - | - - -

   0 | 3 | x 2 |

2. सा रे ग रे सा - - नि़ ध़ नि़ ध़ प़ - - - ग़ प़

   ध़नि़ सा - - सा रे ग रे ग प - ग प ध नि ध

   प ध ग प म - ग - - रेग पम ग म रे - सा

तान

बलि बलि जाऊं -

1. - गरे गप धनि | धप मग रेसा नि़सा

   x | 2

   बलि-बलि जाऊं मधुर सुर गावो

2. - गरे गप धनि | सां - - धनि धप | मग रेग पम ग- | - मरे सानि़ सा -

   0 3 | | x | 2

पाठगत प्रश्न 1.4

1. राग अल्हैया विलावल के वादी-सम्वादी स्वर लिखिए।
2. अल्हैया बिलावल राग का गायन समय क्या है।
3. राग अल्हैया बिलावल का संक्षिपत परिचय दीजिए।

(ङ)

राग-काफी (छोटा ख्याल)

यह राग काफी ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसी आधार पर, गंधार एवं निषाद स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् एक ताल में बद्ध एक बंदिश की संपूर्ण स्वरलिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ – काफी

वादी – पंचम

संवादी – षड्ज

जाति– सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

गायन समय - मध्य रात्रि

आरोह	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	नि	सां	
अवरोह	–	सां	नि	ध	प	म,	ग	रे,	सा	
पकड़	–	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प।

बंदिश

ताल - एक ताल (12 मात्रा)

स्थायी

गुनि गावत काफी राग
खरहरप्रिय मेल जनित
कोमलगति उज्ववल पर
सुर पंचम वादी साध

अंतरा

सरल सरूप विपश्चित
मानत सब सुध अविकल
आश्रय गुनि चतुर कहत

टिप्पणी

कोमल गनि उज्वल पर
सुर पंचम वादी साध

स्वरलिपि

स्थायी

7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
		म		म							
पध	मग	ग	–	रेसा	रे	ग	–	म	प	–	प
गुऽ	निऽ	गा	ऽ	वऽ	त	का	ऽ	फि	रा	ऽ	ग
0		3		4		x		0		2	
नि	सां					म					
सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	–	रे	सा	रे	सा
ख	र	ह	र	प्रि	य	मे	ऽ	ल	ज	नि	त
0		3		4		x		0		2	
नि		म									
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि	उ	ऽ	ज्व	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	
सां											
नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

अंतरा

प											
म	म	म	प	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	सां
स	र	ल	स	रू	ऽ	प	वि	प	ऽ	श्चि	त
0		3		4		x		0		2	
नि	सां	रे	गं	रें	सां	रें	सां	रें	नि	सां	सां
मा	ऽ	न	त	स	ब	सु	ध	अ	वि	क	ल
0		3		4		x		0		2	
रे		ध				म					
सां	–	नि	ध	म	प	ग	ग	रे	सा	रे	नि़
आ	ऽ	श्र	य	गु	नि	च	तु	र	क	ह	त
0		3		4		x		0		2	
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि	ऊ	ऽ	ज	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	

टिप्पणी

नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

आलाप (काफी)

गुनि गावत

	x		0		2		0		3		4	
1.	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	–	–	–
	–	प	ग	रे	–	सा						
2.	रे	रे	ग	ग	म	म	प	ध	नि	ध	प	म
	ग	रे	–	सा	–	–						
3.	म	प	ध	नि	ध	नि	ध	प	म	ग	रे	–
	सा	–	–	–	–	–						
4.	ग	म	प	म	प	ध	नि	सां	नि	प	ग	रे
	म	ग	रे	रे	नि	सा						
5.	म	प	ध	नि	सां	–	–	–	रें	नि	ध	प
	म	ग	रे	–	रे	ग	रे	रे	म	ग	रे	–
	नि	–	नि	–सा								

तान

गुनि गावत

	x		0		2	
1.	रे ग	रे म	ग रे	सा रे	नि सा	रे सा
2.	म ग	म प	ध प	म ग	रे सा	नि सा
3.	म प	ध नि	ध प	म ग	रे सा	नि सा
4.	म प	ध नि	सां नि	ध प	म ग	रे सा

गुनि गावत

	0		3		4	
5.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	नि ध	प म
	x		0		2	
	ग रे	सा रे	ग म	ग रे	सा रे	नि सा
	0		3		4	
6.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	सां रें	सां नि
	x		0		2	
	धप	म ग	रे सा	रे ग	म ग	रे सा

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 1.5

1. काफी राग कौन से थाट का है?
2. काफी राग की जाति क्या है?
3. काफी राग का गायन समय क्या है?

आपने क्या सीखा

1. राग यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैयाबिलावल तथा काफी की अवधारणा।
2. दिए हुए रागों का वर्णन।
3. दिए हुए रागों में स्वरलिपि तथा आलाप तान के साथ बंदिश का वर्णन।

पाठांत प्रश्न

1. राग यमन की बंदिश लिखिए।
2. राग भैरव का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. राग अल्हैया बिलावल के विषय में लिखिए।
4. राग भूपाली का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. राग भैरव और काफी में अंतर लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. रागयमन कल्याण घाट से उत्पन्न राग है। इसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं।
2. रात्री के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।
3. आरोह – सा रे ग म॑ प ध नि सां

   अवरोह – सां नि ध प म॑ ग रे सा

टिप्पणी

1.2

1. राग भैरव, भैरव थाट से उत्पन्न राग है। इसमें रे-ध कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध होते हैं।
2. यह गंभीर एवं शांत प्रकृति का राग है।
3. सुबह गाया जाता है।

1.3

1. राग भूपाली कल्याण थाट का राग है। यह पांच स्वरों का सरल एवं मधुर राग है।
2. इसमें म-नि वर्णित होते हैं।
3. रात्री के प्रथम प्रहर में गाया बजाया जाता है।

1.4

1. बादी-ध, संवादी-ग
2. सुबह गया जाता है।
3. राग अल्हैया बिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाला राग है। इसमें कोमल नि का प्रयोग अवरोह में होता है, बाकी सब स्वर शुद्ध है।

1.5

1. काफी थाट
2. संपूर्ण-संपूर्ण
3. मध्य रात्री

2

ध्रुपद

(क)

राग–यमन

टिप्पणी

ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत में एक जोरदार गायकी है, जिसे राग में गाय जाता है। ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की होता है। ध्रुपद शब्द की उत्पत्ति ध्रुव शब्द से होती है।

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग यमन की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा को पहचान पायेंगे;
- उल्लेखित ध्रुपद विधा में यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल एवं काफी रागों का विस्तार में वर्णन कर पायेंगे;
- ध्रुपद विधा में प्रयुक्त राग पहचान पायेंगे;
- ध्रुपद विधा की उल्लेखित राग को प्रस्तुत कर पायेंगे।

राग परिचय

थाट – कल्याण

वादी – गंधार

संवादी – निषाद

जाति – संपूर्ण–संपूर्ण

गायन समय – रात्रि का पहला प्रहर

आरोह – नि़ रे ग म प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ – नि़ रे ग रे प रे ग रे नि़ रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

स्थाई **ताल – चौ ताल (12 मात्रा)**

चलो हटो जाओ बनवारी
छांडो बैयां मोरी
ढीट लंगर लाज न
आवत तुम कहाँ
हंसती सखियां सारी

अंतरा

छीनत दधि मग
रोकत, बाट चलत

टिप्पणी

नित टोकत
करकी गई सब
चूड़ियां बिगरि गई
सब सारी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प	नि	ध	नि	म	प	ग	प	रे	–	सा	–
च	लो	ह	टो	जा	ओ	ब	न	वा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा	रे	सा	प	–	प	प	प	नि	ध	प	प
छां	ऽ	डो	बै	ऽ	या	मो	री	ढी	ऽ	ट	लं
x		0		2		0		3		4	
प	प	ग	म	प	प	ग	म	प	प	रे	रे
ग	र	ला	ऽ	ज	न	आ	ऽ	व	त	तु	म
x		0		2		0		3		4	
सां	सां	नि	ध	प	ग	म	प	रे	–	सा	–
क	हाँ	हं	स	ती	स	खि	याँ	सा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	–	ग	ग	प	प	सां	ध	सां	–	सां	सां
छी	ऽ	न	त	द	धि	म	ग	रो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
सां	रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प	प
बा	ऽ	ट	च	ल	त	नि	त	टो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
प	नि	ध	नि	प	–	म	ग	म	ध	प	–
क	र	की	ग	ई	ऽ	स	ब	चू	ड़ि	याँ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

टिप्पणी

नि ध	प प	ग म̄	प प	रे –	सा –
बि ग	रि ग	ई –	स ब	सा ऽ	री ऽ
x	0	2	0	3	4

स्थायी

दुगुन

x	0	2	0	3	4
पनि धनि	म̄प गप	रे- सा	सारे सा प	-प पप	निध पप
चलो हटो	जाओ बन	वाऽ रीऽ	छांऽ डोबै	ऽया मोरी	ढीऽ टलं
x	0	2	0	3	4
पप गम̄	पप गम̄	पप रेरे	संसं निध	पग म̄प	रे- सा-
गर लाऽ	जन आऽ	वत तुम	कहाँ हंस	तीस खियाँ	साऽ रीऽ

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प नि ध	नि मे प	ग प रे	- सा -
								च लो ह	टो जा ओ	ब न वा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा रे सा	प - प	प प नि	ध प प	प प ग	म̄ प प	ग म̄ प	प रे रे	सां सां नि	ध प ग	मे प रे	- सा -
छां ऽ डो	बै ऽ या	मो री ढी	ऽ ट लं	ग र ला	ऽ ज न	आ ऽ व	त तुम	क हाँ हं	स ती स	खि याँ सा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

x	0	2	0	3	4
पनिधनि म̄पगप	रे-स- सारेसाप	-पपप निधपप	पपगम̄ पपगम̄	पपरेरे सांसांनिध	पगम̄प रे-सा-
चलोहटो जाओबन	वाऽरीऽ छांऽडोबै	ऽयामोरी ढींऽटलं	गरलाऽ जनआऽ	वततुम कहाँहंस	तीसखियाँ साऽरीऽ

टिप्पणी

अन्तरा

दुगुन

प-	गग	पप	सांध	सां-	सांसां	सारें	गरें	सांसां	निध	निध	पप
छीऽ	नत	दधि	मग	रोऽ	कत	बाऽ	टच	लत	नित	टोऽ	कत
x		0		2		0		3		4	
पनि	धनि	प-	म॑ग	म॑ध	प-	निध	पप	गम॑	पप	रे-	सा-
कर	किग	ईऽ	सब	चुडि	याँऽ	बिग	रिग	ई-	सब	साऽ	रीऽ
x		0		2		0		3		4	

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प - ग	ग प प	सां ध सां	- सां भां
								छीऽन	तदधि	मगरो	ऽकत
								3		4	
सारेंगं	रेंसांसां	निधनि	धपप	पनिध	निप-	म॑गम॑	धप-	निधप	पगम॑	पपरे	-सा-
बाऽट	चलत	नितटो	ऽकत	करकि	गईऽ	सबचु	ड़ियाँऽ	बिगरि	गई-	सबसा	ऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

प - ग	पपसांथ	सां-सांसां	सांरेंगरें	सांसांनिध	निधपप	पनिधनि	प-म॑ग	म॑धप-	निधपप	गम॑पप	रे-सा-
छंऽनत	दधिमग	रोऽकत	बाऽटच	लतनित	टोडकत	करविग	ईऽसब	चुड़ियाँ	बिगरिग	ई-सब	साऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

पाठगत प्रश्न 2.1

1. ध्रुपद के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. ध्रुपद की प्रकृति के विषय में लिखिए।
3. राग यमन के वादी संवादी कौन-से है?

टिप्पणी

(ख)

राग – भैरव (ध्रुपद)

हमने पिछले पाठ में शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भैरव की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में सूलताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही सूलताल है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाठ – भैरव

वादी – धैवत

संवादी – ऋषभ

गायन समय – प्रातः काल

जाति – संपूर्ण-संपूर्ण

रागसूचक स्वर – ग, म रे, सा

आरोह – सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा, ग, म, ध, प, ध, प, म, ग, म, रे, सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-झांप ताल (10 मात्रा)

स्थायी

आदि मध्यांत जोगत जोगी शिव
कनक विष अमियद विषभोगी शिव।

अंतरा

नाभि के कमल ते तीन मूरत भई
भीन जाने सोच नरख भोगी शिव।

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध̲	–	ध̲	प	ध̲	म	म	प	ग	म
आ	ऽ	दि	म	द	अं	ऽ	त	जो	ऽ
x		0		2		3		0	
रे̲	रे̲	रे̲	ग	प	म	ग	रे̲	सा	सा
ग	ऽ	त	जो	ऽ	गी	ऽ	शि	व	ऽ
x		2		0		3		0	
सा	नि़	सा	ग	म	प	ध̲	नि	सां	रें̲
क	न	क	वि	ष	अ	मि	य	ऽ	द
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध̲	प ध̲	नि	ध̲	प म	प	म ग	म
वि	ष	ऽ	भो ऽ	ऽ	गी	ऽऽ	शि	ऽऽ	व
x		0		2		3		0	

अंतरा

म	म	प	ध̲	ध̲	नि	सां	नि	सां	सां
ना	ऽ	भि	के	ऽ	क	म	ल	ते	ऽ
x		0		2		3		0	
ध̲	ध̲	ध̲	नि	सां	रें̲	सांनि	सां	ध̲	प
ती	ऽ	न	मू	ऽ	र	त ऽ	भ	ई	ऽ
x		0		2		3		0	
म	म	प	ग	म	प	ध̲	नि	सां	रें̲
भी	ऽ	न	जा	ऽ	ने	ऽ	सो	ऽ	चे
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध̲	प ध̲	नि	ध̲	प म	प	ग	म
न	र	ख	भो ऽ	ऽ	गी ऽ	ऽ	शि	ऽ	व
x		0		2		3		0	

टिप्पणी

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध–	धप	धम	मप	गम	रेरे	रेग	पम	गरे	सासा
आऽ	दिम	दअे	ऽत	जोऽ	गऽ	तजो	ऽगी	ऽशि	वऽ
x		0		2		3		0	

सानि	साग	मप	धनि	सांरें	सांनि	धपध	निध	पमप	मगम
कन	कवि	षअ	मिय	ऽद	विष	ऽभोऽ	ऽगी	ऽऽशि	ऽऽव
x		0		2		3		0	

इस प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन एवं चौगुन एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद की बंदिश ..... ताल में निबध्द है।
2. राग भैरव का मुख्य स्वर समुदाय ..... है।
3. राग भैरव का वादी ..... और संवादी स्वर ..... है।

(ग)

राग-भूपाली (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भूपाली की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि के साथ दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को देखें।

राग परिचय

थाट - कल्याण

वादी - गंधार

संवादी - धैवत

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति - औड़व-औड़व

आरोह - सा रे ग प, ध सां

अवरोह - सां ध प, ग रे सा

पकड़ - ग, रे, सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल - चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

तू ही सूर्य तू ही चंद्र
तू ही पवन तू ही अगन
तू ही आप तू आकाश
तू ही धरनी यजमान।।

अंतरा

भव रूद्र उग्रसर्व
पशुपति सम-समान

टिप्पणी

ईशान भीम सकल
तेरे ही अष्टनाम।।

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग	ग	रे	ग	प	प	ग	ग	रे	सा	रे	सा
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	ही	चं	ऽ	द्र
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	ध़	सा	ग	रे	प	प	प	ग	ग	ग
तू	ऽ	ही	प	व	न	तू	ऽ	ही	अ	ग	न
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	रे	प	ग	प	सां	सां	ध	सां	सां	सां
तू	ऽ	ही	आ	ऽ	प	तू	ऽ	आ	का	ऽ	श
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
तू	ऽ	ही	ध	र	नी	य	ज	ऽ	मा	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	प	ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	ग्र	स	ऽ	र्व
x		0		2		0		3		4	
सां	ध	–	सां	सां	रें	गं	रें	रें	सां	ध	प
प	शु	ऽ	प	ति	ऽ	स	म	ऽ	स	मा	न
x		0		2		0		3		4	
प	ग	रे	ग	प	सांध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
ई	ऽ	ऽ	शा	ऽ	नऽ	भी	ऽ	म	स	क	ल
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ही	अ	ऽ	ष्ट	ना	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

गग रेग तूऽ हीसू x	पप गग ऽर्य तूऽ 0	रेसा रे सा हीच ऽद्र 2	सासा धसा तूऽ हीप 0	गरे पप वन तूऽ 3	पग गग हीअ गन 4
सासा रेप तूऽ हीआ x	गप सांसां ऽप तूऽ 0	धसां सांसां आका ऽश 2	सांगं रेंसां तूऽ हीध 0	पध सांध रनी यज 3	पग रेसा ऽमा ऽन 4

इसी प्रकार तिगुन नौंवी मात्रा से आरम्भ होकर एक मात्रा में तीन एवं चौगुन सम से आरम्भ होकर एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.3

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा ..... में निबद्ध है।
2. चौताल में ..... मात्रा होती है।
3. राग भूपाली की जाति ..... है।

(घ)

राग–अल्हैया बिलावल (धमार)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग अल्हैया बिलावल की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं ताल सीखे। प्रस्तुत पाठ में धमार ताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की धमार शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट – बिलावल

वादी – धैवत

सम्वादी – गन्धार

जाति – षाड़व – सम्पूर्ण

गायन का समय – प्रातः काल

आरोह – सा रे ग रे ग प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ – म ग म रे, ग प, ध नि सां

धमार (बन्दिश)

ताल–धमार ताल (14 मात्रा)

स्थायी

अनोखे होरी खेलन लागे

अन्तरा

निस ही निस रंग भरत सांवर

कछु सोवत कछु जागे

संचारी

लाल गुलाल लिए कर ललन

नाद नंदन अनुरागे

टिप्पणी

आभोग

कृष्ण जीवन लच्छिराम के प्रभु प्यारे
बने हैं मरगज बागे

स्वरलिपि

स्थायी

														रे
														अ
11	12	13	14	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
ग	प	नि	–	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	रे	
नो	ऽ	खे	ऽ	हो	ऽ	री	खे	ऽ	ल	नऽ	ला	गे	ऽ	
3				x					2		0			

अन्तरा

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	ग
नि	स	ही	ऽ	नि	स	रं	ग	भ	र	ऽत	सां	व	र
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	सां	सां	सांनि	सांध	नि	प	म	ग	रे
क	छु	सोऽ	ऽ	व	त	ऽ	कऽ	ऽऽ	ऽ	छु	जा	गे	ऽ
3				x					2		0		

संचारी

ग	रे	ग	प	म	ग	ग	ग	रे	ग	प	म	ग	रेसा
ला	ऽ	ल	गु	ला	ऽ	ल	लि	ये	क	र	ल	ल	ऽन
3				x					2		0		
ग	–	रे	ग	प	प	–	ध	धनि	प	म	म	ग	रे
नं	ऽ	द	नं	द	न	ऽ	अ	नुऽ	ऽ	रा	ऽ	गे	ऽ
3				x					2		0		

आभोग

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	धनि	प	प–	म	–	ग
कृ	ऽ	ष्	ण	जी	व	न	–	लच्छिरा	ऽ	मके	प्रभु	प्या	रे
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	गं	रें	सां	–	सांध	निप	म	ग	रे
ब	ने	हैऽ	ऽ	म	र	ऽ	ग	ऽ	जऽ	ऽऽ	ना	गे	ऽ
3				x					2		0		

टिप्पणी

स्थायी एवं अंतरा

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
				रेग	पनि	–सां	सांसां	सांध	धनिप	मग	रेग	पध	निसां
				अनो	ऽखे	ऽहो	ऽरी	खेऽ	लनऽ	लागे	ऽनि	सही	ऽनि
					2		0			3			
सांसां	सांध	धनिप	मग	गम	पनिध	निसां	सांसां	सांनि	सांध	निप	मग	रेरे	गप	नि–
सरं	गभ	रऽत	सांव	रक	छुसोऽ	ऽव	तऽ	कऽऽऽ		ऽछु	जागे	ऽअ	नोऽ	खेऽ
x					2		0			3				

इस प्रकार तिगुन में एक मात्रा में तीन और चौगुन में एक मात्रा में चार बोल होंगे तथा संचारी एवं आभोग के दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.4

निम्नलिखित की जोडियाँ बनाइए।

1. थाट – म ग म रे, ग प ध नि सां
2. वादी – सां रे ग रे ग प ध नि सा
3. आरोह – धैवन
4. पपुड – बिलावल

(ङ)

राग-काफी (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग काफी की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट - काफी

वादी - पंचम

संवादी - षड्ज

जाति - संपूर्ण-संपूर्ण

गायन का समय - मध्यरात्रि

आरोह – सा रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा सा, रे रे, ग ग, म म, प

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

आये री मेरे धाम श्याम
कुंवर कृष्ण उनके चरण
नैनन सौं पर सो

अंतरा

वंशी वट तरवर
वंशी लिए साज नटवर
सजि री औड़ पियरो पट
धाय आई री मेरे

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सा	रे	रे	ग	ग	रे	प	–	ध	ग	–	रे
आ	ऽ	ये	री	मे	रे	धा	ऽ	म	श्या	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	
म	ग	रे	रे	नि	सा	रे	ग	प	ध	नि	सां
कुं	व	र	कृ	ऽं	ष्ण	उ	न	के	च	र	ण
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	प	ग	रे	रे	नि	सा
नै	ऽ	न	न	सौं	ऽ	प	र	ऽ	सो	ऽं	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	–	प	ध	नि	सां	सां	सां	रें	नि	सां	रें
वं	ऽ	शी	ऽ	व	ट	त	र	क	र	वं	ऽ
x		0		2		0		3		4	
रें	मं	रें	सं	सां	सां	सां	रें	नि	सां	सां	–
शी	ऽ	लि	ए	सा	ऽ	ज	न	ट	व	ऽ	र
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–
स	ऽ	जि	ऽ	री	ऽ	औ	ऽ	रो	पि	य	रो
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	ग	रे	रे	रे	नि	सा
प	ट	धा	ऽ	य	ऽ	आ	ऽ	ई	री	मं	रे
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
						सारे	रेग	गरे	प–	धग	–रे
						आऽ	येरी	मेरे	धाऽ	मश्या	ऽम
मग	रेरे	निसा	रेग	पध	निसां	निध	मप	गरे	पग	रेरे	नि़सा
कुंव	रकृ	ऽष्ण	उन	केच	रण	नैऽ	नन	सौऽ	पर	ऽसो	ऽऽ

इसी प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन तथा चौगुन एक-मात्रा में चार स्वर लेकर गाये जाते हैं। अंतरे के दुगुन, तिगुन तथा चौगुन भी इसी प्रकार गाये जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.5

1. राग काफी का वादी स्वर कौन सा है?
2. काफी राग की जाति लिखिए।
3. काफी राग के थाट का नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. ध्रुपद एक प्राचीन जोरदार गायकी है।
2. ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की है।
3. राग यमन, भैरव-भूपाली, अल्हैया बिलावल तथा काफी में स्वरलिपि सहित ध्रुपद की बंदिशें हैं।
4. उल्लिखित रागों का सामान्य परिचय

पाठांत प्रश्न

1. राग यमन में ध्रुपद की बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
2. राग भैरव में ध्रुपद की एक बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
3. राग भूपाली का आरोह-अवराह, पकड, वादी, सम्वादी, वर्णित स्वर तथा जाति लिखिए।
4. राग अल्हैया बिलावल का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन जोरदार विधा है। इसे ध्रुवपद भी कहा जाता है, जिसे राग में गाया जाता है।
2. इसकी प्रकृति भक्ति की है।
3. वाही-ग, संवादी-नि

2.2

1. चौताल 2. ग म रे सा 3. वाही-ध संवाही-रे

2.3

1. चौताल 2. 12 मात्रा 3. औडव-औडव

2.4

1. थाट - बिलावल 2. वाही-धैवत
3. आरोह-सारेगरे, गपधनिया 4. पकड़-मगमरे, गप, धनिसां

2.5

1. पंचम 2. संपूर्ण-संपूर्ण 3. काफी

3

अलंकार

हमारे हिन्दुस्तानी संगीत में स्वर साधना की अनेक विधियाँ बताई गई हैं। जिनमें से 'सा' साधना, 'आ' साधना, 'ओमकार' साधना तथा इनके साथ-साथ अलंकारों की साधना को भी विशेष रूप से प्रबलता दी गई है। 'अलंकार' का अर्थ 'आभूषण' है। विद्वानों ने उसकी परिभाषा इस प्रकार दी है कि कुछ नियमित वर्णों के समुदाय अलंकार बन जाते हैं। उनको भी आरोह-अवरोह आदि वर्णों की आवश्यकता होती है। प्रचार में गुणीजन अलंकारों को 'पलटों' की संज्ञा भी देते हैं। उदाहरण स्वरूप अलंकार निम्नलिखित हैं, जिन्हें साथ में दिये गये सी.डी. पर सुना जा सकता है।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी :

- स्वरों के अरोही एवं अवरोही क्रम का वर्णन कर सकेंगे;
- उल्लेखित अलंकारों को गा पायेंगे;
- आरोही एवं अवरोही क्रम को उचित रूप से लिख पायेंगे।

अलंकारों को नीचे दिया गया है।

(1) आरोहात्मक क्रम–

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

(2) आरोहात्मक क्रम–

सासा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सासां।

अवरोहात्मक– सांसां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सासा।

(3) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा।

(4) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.1

खाली जगह भरें

1. हिन्दुस्तानी संगीत में ..... साधना की अनेक विधियाँ बताई गई हैं।
2. अलंकार का अर्थ ..... है।
3. प्रचार में गुणीजन अलंकारों को ..... की संज्ञा भी देते हैं।

---

(5) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां,

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे, प म ग रे सा।

(6) आरोहात्मक क्रम–

सा ग, रे म, ग प, म ध, प नि, ध सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा।

(7) आरोहात्मक क्रम–

सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा।

(8) आरोहात्मक क्रम–

सा रे सा ग, रे ग रे म, ग म ग प, म प म ध, प ध प नि, ध नि ध सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि सां ध, नि ध नि प, ध प ध म, प म प ग, म ग म रे, ग रे ग सा।

(9) आरोहात्मक क्रम–

सा, रे सा, ग रे, म ग, प म, ध प, नि ध, सां नि, रें सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां रें, नि सां, ध नि, प ध, म प, ग म, रे ग, सा रे, नि़ सा।

इन अलंकारों का अभ्यास आकार में भी किया जाना चाहिए तथा कंठ की तैयारी के उपरांत इन्हें समयानुसार लय को बढ़ा-बढ़ाकर प्रतिदिन किया जाना चाहिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.2

1. स र ग म, प ध नि सां को अवरोहात्मक क्रम से लिखिए।
2. सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसा को अवरोहात्मक क्रम में लिखिए।
3. निम्नलिखित स्वरों को आरोही क्रम से लिखिए।

   सांनिध, नि ध प

आपने क्या सीखा

1. अलंकार वह प्रक्रिया है, जिसका प्रयोग बार-बार अभ्यास के लिए किया जाता है।
2. अलंकार का अर्थ है आभूषण।
3. अलंकारों को पल्टा भी कहते हैं।
4. आरोह तथा अवरोह को उचित क्रम में लिखना।

पाठांत प्रश्न

1. अलंकार के विषय में विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. किन्हीं तीन अलंकारों को आरोह-अवरोह क्रम से लिखिए।
3. निम्नलिखित स्वरों को आरोही क्रम से लिखिए-

   सांनिसांध, निधनिय, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. अलंकार
2. आभूषण
3. पल्टा

3.2

1. सांनिधप मगरेसा
2. सांनि, निध, धप, पम, मग, ग रे रे सा
3. धनिसा, प ध

4

ताल परिचय

हिन्दुस्तानी संगीत कोर्स के सिद्धांत भाग के अंतर्गत ताल की अवधारणा के विषय में पहले ही बताया जा चुका है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त शब्द का उपयोग संगीत की महानता को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जोकि कोई भी तालबद्ध ताल है। ताल के विभिन्न ठेकों का विवरण प्रयोगात्मक भाग में दी गयी बंदिशों को बेहतर रूप से समझने के लिए प्रस्तुत पाठ में दिया जा रहा है। ठेकों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- उल्लेखित तालों का विस्तार में वर्णन कर सकेंगे;
- उल्लेखित तालों को लिख सकेंगे;
- विभिन्न तालों को पहचान सकेंगे;
- तालों का लय के साथ उच्चारण कर सकेंगे।

तीनताल

मात्राएँ – 16

विभाग – 4 (प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा पर)

ख़ाली – 'O' (नौंवी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पाँचवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (तेरहवीं मात्रा पर)

तीनताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
X				2				0				3			

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थान भरिए:-

1. ताल को कभी-कभी ताल या ..... कहते हैं।
2. ताल शब्द का उपयोग भारतीय ..... संगीत में किया जाता है।

टिप्पणी

3. विभिन्न तालों की ..... का वर्णन करें।
4. तीन ताल में ..... भाग होते हैं।

दादरा

मात्राएँ – 6

विभाग – 2 (प्रत्येक विभाग में तीन-तीन मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (चौथी मात्रा पर)

दादरा का ठेका

1	2	3		4	5	6
धा	धी	ना		धा	ती	ना
X				O		

कहरवा

मात्राएँ – 8

विभाग – 2 (प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (पांचवीं मात्रा पर)

कहरवा ताल का ठेका

1	2	3	4		5	6	7	8
धा	गे	ना	ती		ना	के	धी	न
X					O			

पाठगत प्रश्न 4.2

1. दादरा ताल की मात्राओं की संख्या लिखिए।
2. दादरा ताल का ठेका लिखिए।
3. कहरवा ताल में कितने भाग होते हैं।
4. कहरवा ताल की मात्राएं सम तथा खाली के साथ लिखिए।

टिप्पणी

झपताल

मात्राएँ – 10

विभाग – 4 (इनमें दो विभागों में दो-दो मात्राएँ तथा दो विभागों में तीन-तीन मात्राएँ होती है)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (छठीं मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (तीसरी मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (आठवीं मात्रा पर)

झपताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
X		2			O		3		

एकताल

मात्राएँ – 12

विभाग – 6 (प्रत्येक विभाग में दो-दो मात्राएँ हैं)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (तीसरी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पांचवी मात्रा पर)

दूसरी खाली – 'O' (सातवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (नौंवी मात्रा पर)

चौथी ताली – '4' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

एकताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
X		0		2		0		3		4	

टिप्पणी

चौताल

मात्राएँ – 12

विभाग – 6 (प्रत्येक विभाग में दो-दो मात्राएँ हैं)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (तीसरी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पांचवी मात्रा पर)

दूसरी खाली – 'O' (सातवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (नौंवी मात्रा पर)

चौथी ताली – '4' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

चौताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
X		0		2		0		3		4	

धमार

मात्राएँ – 14

विभाग – 4 (पहले विभाग में 5 मात्राएं, दूसरे विभाग में 2 मात्राएं, तीसरे विभाग में 3 मात्राएं तथा चौथे विभाग में 4 मात्राएं होती हैं।)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

दूसरी ताली – '2' (छठी मात्रा पर)

ख़ाली – 'O' (आठवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

धमार का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
X					2		0			3			

पाठगत प्रश्न 4.3

1. सम और खाली को आप किस प्रकार लिखेंगे।
2. झपताल में कितनी मात्राएं होती है।
3. एक ताल के भाग लिखिए।
4. चौताल में सम और खाली को लिखिए।
5. ताल धमार का ठेका लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. ताल 'शब्द का प्रयोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में होता है।
2. शाब्दिक अर्थ है एक ताली, किसी की बांह पर किसी का हाथ बांधना।
3. विभिन्न तालों का ठेका जैसे तीन ताल, दादरा, झपताल, एकताल, चौताल, धमार का वर्णन है।
4. ताल का विस्तृत वर्णन ताली, खाली, सम तथा विभाग सहित है।

पाठांत प्रश्न

1. संगीत में ताल के विषय में लिखिए।
2. तीन-ताल तथा दादरा ताल का ठेका सहित वर्णन कीजिए।
3. एक ताल तथा चौताल में अंतर लिखिए।
4. धमार ताल के विषय में लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. ताल
2. शास्त्रीय
3. ठेका
4. चार

4.2

1. छः मात्रा
2.

1	2	3 |	4	5	6
धा	धी	ना |	धा	ती	ना

3. दो
4. सम – पहली मात्रा पर, खाली–चौथी की मात्रा पर

4.3

1. सम "X", खाली "O"
2. 10 मात्रा
3. 6
4. सम – पहली मात्रा पर

   खाली – तीसरी तथा सातवीं मात्रा पर
5. ताल धमार का ठेका

का	धि	ता	धि	ता	धा	ऽ	गा	ति	ता	ति	ता	ता	ऽ
X					2		0		3				

5

देशभक्ति गीत

(क)

हिन्द देश के निवासी

भारतवर्ष विविधताओं का देश है। इस देश की धरती पर विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं जिसके कारण यहाँ के पेड़-पौधे, लोग, लोगों का रहन-सहन तथा पशु-पक्षी तक प्रभावित होते हैं। इन प्रभावों के मद्देनज़र हमें अत्यधिक विविधताएं दिखाई पड़ती हैं जो कि इस पृथ्वी पर बहुत ही कम देशों में विद्यमान हैं। प्रस्तुत गीत में इन्हीं विविधताओं का वर्णन किया गया है। इस वर्णन के माध्यम से गीतकार ने अपने देशभक्ति, देशप्रेम तथा भारतवर्ष की भव्यता को दर्शाने का एक सफल प्रयास किया है। भारतवासियों के रंग रूप, वेष, भाषा आदि की विभिन्नताओं का वर्णन है। बेला, गुलाब, जूही आदि पुष्पों तथा कोयल, पपीहें, बुलबुल आदि के द्वारा अनेकता में एकता का प्रदर्शन किया है। इसके अतिरिक्त इस धरती पर बहने वाली अनेक पवित्र नदियों के उदाहरण द्वारा हमारे देश की प्राकृतिक सम्पन्नता पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- उल्लेखित देश भक्ति गीत की पृष्ठभूमि बता पायेंगे;
- उल्लेखित देश भक्ति गीत को सही रूप में प्रस्तुत कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों को लिख पायेंगे।

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।

(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।।

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।।

(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।।

टिप्पणी

स्वरलिपि

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

स्थायी

सा	–रे	स	–रे	सा	–रे	सानि	प़
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी
X				O			
–	प़नि़	–सा	–नि	सरे	–रे	रे	–
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ–
X				O			
म	–म	म	मग	रेग	–ग	रेसा	सानि
रं	ऽग	रू	ऽप	वेऽ	ऽश	माऽ	षाऽ
X				O			
–	नि़सा	नि़सा	रेरे	सा	–सा	सा	–
ऽ	चाऽ	ऽहे	ऽअ	ने	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अंतरा

–	ग–	रेग	–म	प	–प	प	प
ऽ	बेऽ	ऽला	ऽगु	ला	ऽब	जू	ही
X				O			
–	प	–प	–ध	ग	प	म	ग
ऽ	चं	ऽपा	ऽच	मे	ऽ	ली	ऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	नी	–नी	सरे	रेग
ऽ	प्या	रेप्या	ऽरे	फू	ऽल	गूँऽ	थेऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	सा	–सा	सा	–
ऽ	मा	ऽला	ऽमें	ए	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. देशभक्ति गीत में विविधता को सुंदरता से ..... किया गया है।
2. कवि ने भारत के लोगों को ..... बताते हुए अलग-अलग ..... का वर्णित किया है।
3. कवि ने भारत के लोगों की तुलना अलग-अलग ..... की है, परन्तु अन्त में .... में मिल गई है।

टिप्पणी

(ख)

जय जन भारत

इस गीत में कवि ने हमारे देश की प्रमुख विशेषतायें वर्णित की हैं तथा भारत के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित की है। हमारे देश की शान हिमालय पर्वत तथा पवित्र नदी गंगा की महिमा का भरपूर गुणगान किया है। कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा के रूप में वर्णित किया है। जिस भूमि के माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित है, हृदय में पावन गंगा हार के समान प्रवाहित हो रही है, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर शोभायमान है, ऐसी धरती की हम वन्दना करते हैं। प्रकृति की निरन्तर गतिशीलता को भारतवर्ष की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और निरन्तर काम करते हुए लोगों की महिमा गाकर हम गौरव का अनुभव करते हैं। संसार की सर्वाधिक पुरानी सभ्यता के रूप में भारत अग्रणी है। मानव को सत्य, अहिंसा, शान्ति का संदेश देने वाला यह देश वन्दनीय एवं पूजनीय है। प्रस्तुत बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दी गयी सी.डी. को सुनें।

जय जन भारत

जय जन भारत जन मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता

1. गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल
   कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2. हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर
   विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3. प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाता
   जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता
   जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

स्वरलिपि

ताल-कहरवा (8 मात्रा)

नोट- इसमें पाँचवां काला स्केल का प्रयोग है।

स्थायी

X				O			
ग	ग	म	प	प	-	प	प
ज	य	ज	न	भा	ऽ	र	त

टिप्पणी

प	प	ध्	प	म	प	म	ग
ज	न	म	न	अ	भि	म	त
–	गग	–म	प	प	–	सां	प
ऽ	जन	–ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा-I

X				O			
प	–	प	प	सां	–	सां	सां
गौ	ऽ	र	व	भा	ऽ	ल	हि
सां	–	रें	गं	सां	–	रें	रें
मा	ऽ	ल	य	उ	ऽ	ज्जव	ल
रें	रें	रें	रें	–	गं	सारें	सांनि
ह	द	य	हा	ऽ	र	गंऽ	ऽऽ
नी	–	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
गा	ऽ	ज	ल	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
–	म	प	प	प	–	प	प
ऽ	क	टि	विं	ध्या	ऽ	च	ल
रें	–	सां	नी	सां	ध	ध	ध
सिं	ऽ	धु	च	र	ण	त	ल

टिप्पणी

–	म	म	म	ध	ध	ध	ध
ऽ	म	हि	मा	शा	ऽ	श्व	त
सां	–	सां	–	प	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

दूसरी बार

प	–	प	म	ग	रे	सा	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा II की स्वरलिपि अंतरा I के समान है।

अंतरा-III

X O

प	प	प	प	–	प	प	ध
प्र	थ	म	स	ऽ	भ्य	ता	ऽ
ध	नी	नी	–	–	–	–	–
ज्ञा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
सा	ऽ	म	ध्व	नि	त	गु	ण
(रें)	–	सां	–	–	–नी	धनी	धप
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

दूसरी बार

X O

रें	–	सां	–	–	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	गं	गं	गं	गं	–	गं	गं
ज	य	न	व	मा	ऽ	न	व
गं	–	गं	सां	रें	–	रें	–
ता	ऽ	नि	र	मा	ऽ	ता	ऽ

टिप्पणी

रें	–	रें	रें		रें	–	सां	नी
स	ऽ	त्य	अ		हिं	ऽ	सा	ऽ
रें	–	सां	–		–	–	–	–
दा	ऽ	ता	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							प	प
							ज	य
सां	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
रें	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
गं	–	–	–		–	–	–	–
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	–	रें	सां		रें	–	सां	नी
शां	ऽ	ति	अ		धि	ऽ	ष्ठा	ऽ
सां	नी	ध	प		म	ग	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	म	प		प	–	प	प
ज	य	ज	न		भा	ऽ	र	त
प	प	ध	प		म	प	म	ग
ज	न	म	न		अ	भि	म	त
–	गग	म	प		प	–	सां	प
ऽ	जन	ग	ण		तं	ऽ	त्र	वि

टिप्पणी

ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	–	प	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	ध	ध	ध	ध	–	ध	ध
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
नी	–	नी	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नी	नी	नी	नी	नी	–	नी	नीरें
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
(रें)	सां	सां	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 5.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. कवि ने हिमालय को हमारे देश का ..... बताया है, तथा ..... नदी के सौंदर्य का वर्ण किया है।
2. कवि ने भारत को सजीव ..... के रूप में वर्णित किया है।
3. संसार में भारत की सर्वाधिक ..... है।

टिप्पणी

(ग)

तेरे चरणों में झुका माथ है

प्रस्तुत गीत देश के प्रति आभार प्रकट करने के विषय में है। इस गीत के माध्यम से कवि गंगा, गोदावरी इत्यादि नदियों की प्रकृति एवं सौंदर्य के विशाल स्वरूप का वर्णन करता है। इसमें देश की गरिमा के लिये यहाँ के लोगों का जीवन न्यौछावर करने की तत्परता बतायी गयी है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में इस गीत का क्रियात्मक प्रदर्शन सुनें।

स्थायी

तेरे चरणों में (3)
झुका माथ है (3)
तेरे चरणों में
आकाश जिसकी ध्वजाएं उड़ाता,
जो है, युगों से धरा पर सुहाता,
तू है वही मान मन्दिर हमारा,
कण कण जिसे जोड़ता हाथ है,
झुका माथ है
तेरे चरणों में...

गोदावरी गंगा

गोदावरी और गंगा किनारे,
सौगंध है एक ही धूल की,
कश्मीर बंगाल गुजरात केरल
गाता वही धूल की शूल की
जागी हुई देश की आरती में,
जागी हुई भारती साथ है
झुका माथ है...
तेरे चरणों में...

स्वरलिपि

ताल - दादरा (6 मात्रा)

नोट: इस गीत के लिये सी शार्प/पहले काले स्केल का इस्तेमाल करें।

x			0		
			–	सा	रे
			ऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ

टिप्पणी

रे	रे	रेग	रेग	सा	रे
चर	णों	मेंऽ	मेंऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ
रे	रे	गरे	सानि़	ध़नि़	प़ऽ
चर	णों	ऽऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	-नि़	नि़	नि़	नि़ सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	-स	सा	नि़	प़
का	मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा I

x			0		
प	सां	सां	सां	सां	सां
आ	का	श	जिस	की	ऽ
म	ध	ध	ध	ध	ध
ध्व	जा	यें	उ	ड़ा	ता

टिप्पणी

म	ध	ऽध	ध	ध	ऽध
जो	है	ऽयु	गों	से	ऽध
नि	ध	ऽप	प	प	प
रा	प	ऽर	सु	हा	ता
प	ग	–ग	म	म	म
तु	है	ऽव	ही	मा	न
प	ध	ऽनि	ध	प	य
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
प	ग	रे	सा	प	–प
तु	है	व	ही	मा	ऽन
प	ध	ऽनि	ध	प	प
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
स	ग	ऽग	ग	मग	रेसा
कण	कण	ऽजि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	स	–ग	ग	मग	रेसा
कण	कण	–जि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	गरे	नि़	ध़नि	प़ऽ
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु

टिप्पणी

ध़	ध़	ध़	ध़	ऽ	ऽध
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	निसा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	–रे	सा	सा	ध़	प़
का	–मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
च	र	णों	में	–	–

अंतरा II

x			0		
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽऽ	व	री	ऽ
सा	म	–	–	–	–
गं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽव	री	औ	र
ग	–रे	–स	रे	ग	ऽ
गं	ऽगा	–कि	ना	रे	ऽ
रेग	रेसा	रेसा	ध़स	ध़प	ध़प़
सौऽ	ऽग	न्ध	हैऽ	ऽए	ऽक
ग	–रे	–सा	सा	–	–
ही	ऽ	–धू	ऽ	ल	की
प	सां	सां	सां	सां	सां
क	श्मी	र	बं	गा	ल

टिप्पणी

म	ध	ध	ध	ध	ध
गुज	रा	त	के	र	ल
म	ध	ध	ध	ध	ध
गा	ता	व	ही	धू	ल
नि	धऽ	प	प	ऽ	ऽ
की	शू	ल	की	ऽ	ऽ
प	प	ग	म	म	–म
जा	गी	हु	ई	दे	–श
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
प	ग	रे	सा	प	–प
जा	गी	हु	ई	दे	ऽश
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
सा	ग	–गु	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भाऽ	ऽर
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ती	सा	ध	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	ग	–ग	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भा	ऽर
रे	रे	गरे	सानि	धनि	पऽ
ती	सा	थऽ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ऽध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु

नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	नि़सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	सा	–	ध़	प़
का	मा	थ	है	तें	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	–		

पाठगत प्रश्न 5.3

सही प्रश्न चुनिए–

1. गीत में आभार प्रगट किया गया है।

   (i) देश के प्रति

   (ii) मानवता के लिए

   (iii) आकाश के लिए

2. कवि ने नदियों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

   (i) गंगा, गोदावरी

   (ii) कृष्णा, कावेरी

   (iii) नर्मदा, ताप्ति

3. भारत के लोग हमेशा अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तत्पर होते हैं क्योंकि–

   (i) वन्य जीवन के रक्षण के लिए

   (ii) राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

   (iii) हरे पौधों के रक्षण के लिए।

टिप्पणी

(घ)

चंदा जैसी धरा हमारी

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी''

अर्थात यह धरती, जिस पर हमने जन्म लिया है वह हमारे लिए स्वर्ग से बढ़कर है।

ठीक इसी प्रकार के भावों को इस देशभक्ति गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश के बहुत से पर्व व त्यौहार यहां पर होने वाली उपज के मौसम पर ही आधारित हैं। हमारे लिए फसल के दाने किसी हीरे, जवाहरात आदि रत्नों से कम नहीं हैं। हमारे देश में अध्यात्म को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है जिसके कारण पूरा विश्व हमारे देश को गुरूपद मानता है। हमारा देश इस प्रकार का सदाबहार बाग है जिसमें सदैव प्रेम के गीत गाए जाते हैं। एक ओर इस देश का किसान मेहनत करके देश के लोगों को अन्न उपलब्ध कराता है तथा दूसरी ओर हमारे देश की फौज का जवान हमारे लोगों की बाहरी आक्रमण से रक्षा करने में पूर्ण रूप से जागरूक है। इसलिए हम इन दोनों को नमन करते हैं। हमारे देश का कामगार और तकनीकी कारीगर पूरे विश्व में सर्वोच्च है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन को सुनें।

चंदा जैसी धरा

स्थायी

चंदा जैसी धरा हमारी, फूल समान हमारा वतन
भारत के खेतों में उपजें, हीरे, मोती, लाल रतन

अंतरा-1

मिट्टी में सोना उपजाते इसके मेहनत कश इंसान
सीमाओं की रक्षा करते जागरूक है वीर जवान
या किसान हो या जवान हो दोनों को शतबार नमन
भारत के .....

अंतरा-2

रक्षक है ईमान हमारा धर्म हमारा पहरेदार
इसलिये सारी दुनिया में देश हमारा है सरताज
प्रीत के गीत है कोयल गाती यह है सदाबहार चमन
भारत के .....

टिप्पणी

अंतरा-3

इसकी मिट्टी की खुशबू में कुदरत ने हैं मस्ती भरी
दुनिया भी है दंग देखकर, कामगारों की जादूगरी
लाख कोशिशें कर ले दुश्मन, छीन सकेगा न इसका अमन
भारत के .....

स्वरलिपि

राग-पाहारी, ताल-केहरवा (8 मात्रा)

यह गीत पहाड़ी राग पर आधारित है और ताल कहरवा में निबद्ध है। स्वर तीसरा काला (F#) है।

आलाप

X				O			
ध	–	–	–	स	नि़	रे	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ध़	–	–	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	–	–	ध़	–	रे	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	हो	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

स्थाई

प़	–	प़	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
ध	रा	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ
रे	रे	–	रे	सा	–	ध़	ध़
फू	ऽ	ल	स	मा	ऽ	न	ह

टिप्पणी

रे	स	ग	रे	सा	–	–	–
मा	ऽ	रा	व	तन	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	–	ध़	ध़	ध़	–	ध़	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तों	ऽ	में	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ
ग	–	ग	रे	ग	रे	–	ध़
ला	ऽ	ल	र	तन	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	स
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा 1

X				O			
प	–	प	–	प	–	प	–
मि	ऽ	ट्टी	ऽ	मे	ऽ	सो	ऽ
ध	प	ध	प	ग	रे	ग	–
ना	ऽ	उ	प	जा	ऽ	ते	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

टिप्पणी

सा	–	सा	सा	रे	–	ग	–
इ	स	के	ऽ	मेह	ऽ	नत	ऽ
ध	ध	ध	–	प	–	–	प
क	श	इं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	न
ध	ध	ध	–	ध	–	ध	म
सी	ऽ	मा	ऽ	ओ	ऽ	की	ऽ
ग	–	म	रे	रे	–	रे	रे
र	ऽ	क्षा	ऽ	कर	ऽ	ते	ऽ
रे	–	रे	रे	ग	–	ग	–
जा	–	ग	रु	ऽ	क	है	ऽ
ध	–	ध	प	प	–	–	प
वी	ऽ	र	ज	वा	ऽ	ऽ	न
प	–	प	–	ग	–	ग	–
या	–	कि	सा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
य	–	ज	वा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	–	रे	रे	रे	सा	–	–
दो	–	तो	ऽ	को	ऽ	श	त
ग	रे	ग	रे	सा	–	–	–
बा	ऽ	र	न	म	न	ऽ	ऽ
ध	–	ध	ध	ध	–	ध	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तो	ऽ	मे	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ

टिप्पणी

ग	–	ग	रे	|	ग	रे	–	सा
ला	–	ल	र	|	तत	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	प़	–	|	ग	–	झ	–
चं	ऽ	दा	ऽ	|	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	|	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	|	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे अंतरे की स्वरलिपि है।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. ''जननी चन्मभूमिश्च इच स्वर्गादपि गरियसी'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।
2. भारत के किस ऋतु पर कई मेले एवं पर्व आधारित हैं?
3. वह कौन-सी वस्तुएं है, जिनकी तुलना फसल के होने के साथ की जाती है।

टिप्पणी

(ङ)

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

'सारे जहां से अच्छा' एम. इकबाल द्वारा लिखा गया एक प्रचलित देशभक्ति गीत है। इसे 'तराना-ए-हिन्द' नाम से भी जाना जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व लगभग 1904 में लिखे गये भारतीय उप-महाद्वीप के इस स्तुतिगान का सामान्य अर्थ है कि हमारा देश हिन्दोस्तान समस्त संसार से अच्छा है। हम इसकी बुलबुले हैं और यह हमारा गुलिस्तान है। यह सबसे ऊंचा पर्वत है जो हमारी रखवाली करता है। इसकी गोद में हज़ारों नदियां किलकारी करती हैं, जिससे स्वर्ग को भी ईष्या हो जाये। धर्म आपस में द्वेष करना नहीं सिखाता। मूल गीत में अन्य पद भी हैं, परन्तु नीचे दिया गया संक्षिप्त संस्करण भारत में विविध धुनों में प्रचलित हैं।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

शब्दकार–एम. इकबाल

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुल बुलें हैं उसकी, वो गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।

टिप्पणी

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा''

ताल–कहरवा (द्रुत लय) या धुमाली

0
– सा
सा

स्थायी

x		0		x		0		x		0		x		0	
रेम	– –	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां –
रे ऽ	ऽ ऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	हम
नां निः	–ध	नि–	–ध	निरें	सा–	––	ध–	पप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां–
बुल	ऽ बु	लेऽ	ऽहैं	उस	कीऽ	ऽऽ	वोऽ	गुल्	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	सा
रेम	– –	पध	– म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	– –
रेऽ	ऽ ऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

अन्तरा

x		0		x		0		x		0		x		0
सां–	–सां	धम	–ध	सां–	सां–	––	धसां	रं–	––	सारें	गरे	सांनि	ध–	ध –
वऽ	ऽत	वोस	बसे	ऊँऽ	चाऽ	ऽऽ	हम	साऽ	ऽऽ	याआ	ऽस	मांऽ	काऽ	ऽ ऽ
रे –	–सां	निसां	–नी	धनि	धप	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म' –	– –
संऽ	ऽत	रीऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	बाँऽ	पाऽ	ऽस	बाऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ
रेम	–म	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽ ऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ

शेष दो अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ..... जोकि सबसे ऊंचा पर्वत है, हमारी रक्षा करता है।
2. स्तुति गान का सामान्य अर्थ है, कि हिन्दुस्तान समस्त ..... से अच्छा है।
3. हिमालय पर्वत की गोद में हजारों उल्लासपूर्ण नदियाँ हैं, जिससे ..... होती है।

आपने क्या सीखा

1. देश भक्ति के गीतों में कवियों ने भारत के लोगों को अलग प्रकार से वर्णित किया है।
2. कवि ने अनेकता में एकता को बताते हुए अपने देश के प्रति अपने भक्तिभाव को दर्शाने का प्रयत्न किया है।
3. राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता तथा गंगा, गोदावरी आदि नदियों की सुंदरता दर्शाया गया है।
4. ऐसा उल्लेख किया गया है कि भारत के लोग, देश की प्रभुसत्ता को बचाने के लिए सदैव अपने जीवन का बलिदान करने को तैयार रहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. ''हिंद देश के निवासी'' इस कविता की पृष्ठ भूमि को समझाइए।
2. ''एकता में अनेकता'' वर्णन कीजिए।
3. ''कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा'' के रूप में वर्णित किया है। कैसे?
4. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। समझाइए।
5. ''सारे जहाँ से अच्छा'' इस गीत के अर्थ की पृष्ठभूमि को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. वर्णित
2. माला, फूल
3. नदियों, सागर

5.2

1. गौरव, गंगा
2. प्रतिमा
3. प्राचीन सभ्यता

टिप्पणी

5.3

1. देश के प्रति
2. गंगा, गोदावरी
3. राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

5.4

1. जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।
2. उपज के मौसम
3. कीमती रत्न, जैसे- हीरे, जवाहरात

5.5

1. हिमालय
2. संसार
3. स्वर्ग को भी ईर्ष्या

6

लोकगीत

(क)

गढ़वाली लोकगीत

यह गीत उत्तराखंड का लोक गीत है, जो कि उत्तराखंड में होने वाले मेलों अथवा पर्वों में गाया जाता है। जिस प्रकार कई बार गीत में तुकबंदी के लिये निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार इस गीत में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग मिलता है।

इस गीत में युवक-युवती के बीच गीत के माध्यम से संवाद हो रहा है, जिसमें युवक कहता है कि मेरे गांव में मेला लगा है और आप भी उस मेले को देखने आइये। तब युवती कहती है कि यह समय जेठ की बारा गति का है और इस समय आपके गांव के खेतों में गेहूं की फसल लगी है, जो दिखने में सुन्दर लगती है। इसलिये मैं भी मेले को देखने आ रही हूँ। प्रस्तुत गीतों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सीडी को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी :

- लोकगीत की पृष्ठभूमि एवं शैली का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत को प्रदर्शित कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रदेश के लोकगीत को पहचान पायेंगे।

1) लै पाकी जाला केलमा लै पाकी जाला केला
लै तू भी आई जाणू रे मेरा गौं का मेला
हो निलिमा मेरा गौं का मेला।

2) लै तीलू मां का तेलमा लै तीलू मां का तेला
ओ बीरूमां बीरूमां लै तीलू मां का तेला
लै कति गति ओंदी रे तैरा गौं का मेला
ओ बीरूमां बीरूमां तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

3) लै गेहूं जौ का लेटा मा, लै गेहूं जौ का लेटा
ओ निलिमा निलीमा लै गेहूं जौ का लेटा
लै तेरा गौं का मेला रे बारा गति जेठा
ओ निलिमा निलिमा बारा गति जेठा।

4) लै कुकड़ी को बीटा मा लै कुकडी को बीटा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कुकड़ी को बीटा
लै तेरा गौं का मेला रे छकी ल्यूला गीता
ओ बीरूमा बीरूमा छकी ल्यूला गीता।

5) लै पीतैले पराता मां लै पीतैले परात
ओ निलीमा निलीमा लै पीतैले पराता
यनि लौंणा गित रे यखी खुल्या रात
ओ निलीमा निलीमा यखी खुल्या रात।

6) लै दही की जामुणां मां लै दही की जमुणा
ओ बीरूमा बीरूमा लै दही की जमुणा
लै तेरा गौं का मेला रे क्या देली सामुणा
ओ बीरूमा बीरूमा क्या देली सामुणा।

7) लै गीत लाई झुमैला मा लै गीत आई सुमेला
ओ निलीमा निलीमा लै गीत आई सुमेला
सामोणा मां द्यूलू रे अपुणु रूमैला
ओ निलीमा निलीमा अपुणु रूमैला।

8) लै कन्डाली को हेरा मा लै कन्डाली को हेरा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कन्डाली को हेरा
यखुली यखुली रे मैं लगदी का डेरा
ओ बीरूमा बीरूमा मैं लगदी का डेरा।
ओ निलिमा निलीमा मेरा गौं का मेला
ओ बीरूमा बीरूमा तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

स्वरलिपि

खेमटा ताल

X			0			X			3		
											साग (लैऽ)
ग	प	म	म	ऽ	प	प	प	म	ग	सा	ग
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ल	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	–
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नि	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग		
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ		
										सा	ग
										लै	ऽ
ग	प	म	म	–	प	प	प	म	ग	सा	ग
तू	भी	ऽ	आ	ऽ	ई	जा	णू	रे	ऽ	मे	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नी	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	मे	ऽ
ग	म	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	–	–

(अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे)

पाठगत प्रश्न 6.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. उत्तरांचल का गढ़वाली लोक गीत ''लै पाकी जाला केलमा'' ..... तथा ..... के समय गाया जाता है।
2. गीत में ..... और ..... के बीच संवाद है।
3. गीत में ..... के लिए अर्थहीन शब्दों का प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ख)

हरियाणवी लोक गीत

इस प्रकार के लोकगीत सामाजिक शिक्षाप्रद गीतों की श्रेणी में आते हैं जिनमें दी गई शिक्षा को अगर हम असल जीवन में उतारें तो वह हमारे लिये बहुत फायदेमंद तो साबित होती ही है, हम उन बहुत सारी परेशानियों से भी बच जाते हैं जो हमारे जीवन में आती हैं। इन गीतों का गायन हर मौसम व हर उत्सव पर किया जाता है। बच्चे, जवान व बूढ़े इन गीतों को बड़े चाव से सुनते हैं। इस गीत का भाव इस प्रकार है कि ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बार-बार भी दी जाए तो भी वह उसे ठीक से नहीं अपनाता, पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवा देता है तथा उस शिक्षा से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित रह जाता है।

हरियाणवी लोक गीत

ज्ञान की बाते सुणे ज्ञानी तो समझे एक इशारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

कैरा माणस काला ढोरी घर पाछे ने मोरी हो।
उस लाठी का नहीं भरोसा जिसकी लाम्बी पोरी हो।
सास बहू ते झगड़म झगड़ा नहीं काम की गोरी हो।
घर क्यां ने समझानी चाहिये जो बड़बोला छोरी हो।।
भाई-भाई रहें झगड़ते सबकी गाली खाते हैं।
नुगरा मानस जागे कोन्या सौ सौ रूकै मारे तै।

भगवां बाणा धारण करके न्यूं के साधु होए आ केरे।
कोई कोई साधु वो बणज्या जो घर ते बाधु हुआ करैं।
बिना भजन का साधू तै एक टट्टू लादू हुआ करै।
असली साधु धोरे हरिभजन का जादू हुआ करै।
भक्ति भाव बिना कनफाड़े मांगें टूक द्वारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

टिप्पणी

हरियाण्वी लोक गीत

स्वरलिपि

ताल - कहरवा - (8 मात्रा)

स्थायी

X				0			
				पप	पप	ध ध	पमग
				ज्ञान	की बात	सुनै	ज्ञानी तो
गमप	मग	रेग	रेस	ग ग	रे स	नि ध	सासा
समझै	एक	इशारे	तैऽ	नुगरा	मानस	मानै	कोन्या
सरे	गम	गसरे	गस				
सौसौ	रुके	मारेऽ	तैऽ				

अन्तरा 1

				पप	पप	पप	पप
				कैरा	माणस	काला	ढ़ोरी
पध	धनि	धप	न	मम	मम	मम	मम
घर	पाछे	नमोरी	हो	उस	लाठी	कानहीं	भरोसा
गम	मप	मम	म				
जिसकी	लाम्बी	पोरी	हो				

अन्तरा 2

				ग ग	ग ग	रेग	ग ग
				सास	बहु	तैझग	ड्मझगड़ा
सरे	रेग	रेस	स	गम	गग	रेग	गग
नही	कामकी	गोरी	हो	घरक्यां	नेसम	झाणी	चाहिये
सरे	रेग	रेस	स				
जोबड़	बोला	छोहरी	हो				

टिप्पणी

अन्तरा 3

				पप	पप	धध	पमग
				भाई	भाई	रहैझग	ड़ते
गमप	मग	रेग	रेस	गग	रेस	–	–
सबकी	गाली	खाते	हैंऽ	नुगरा	माणस	–	–

अन्तरा 4

X 0

				पप	पप	पप	पप
				भगवा	बाणा	धारण	करके
पध	धनि	धप	मा				
न्यूके	साधु	हुया	करै				
				मम	मम	मम	मम
				कोई–2	साधु	वो बण	ज्याजो
गम	मप	मम	मा				
धरपै	बाधु	होएआ	करै				

अन्तरा 5

0

				ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
				बि ना	भजन	का साधु	नै एक
X							
सारे	रे गा	रे सा	स	ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
टट्टू	लाटू	हुआ	करै	असली	साधु	धोरे	हरि
सारे	रेगा	रेसा	स				
भजन	का जादू	हुआ	करै				

अन्तरा 6

0

				पप	पप	धध	पम
				भक्ति	भाव	बिना	कनफाड़े
X							
गम	मग	रेसा	रेसा	ग ग	रेस		
मांगेंऽ	टूक	द्वारे	तैऽ	नुंगरा	माणस		

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ''ज्ञान की बात सुणे ज्ञानी'' इस गीत का सारांश लिखिए।
2. ''ज्ञान की बात सुने ज्ञानी'' यह गीत किस मौसम में गाया जाता है।
3. इस प्रकार के लोक गीत किस वर्ग में आते हैं? लिखिए।

टिप्पणी

(ग)

पंजाबी लोकगीत (जिंदुआ)

यह पंजाबी लोक गीत 'पंजाब' में 'जिंदुआ' के नाम से प्रसिद्ध है। इस गीत में जीवन के साधारण पक्षों पर बात करते हुए सहजता का आनन्द लिया गया है। विभिन्न शहरों जैसे- पटियाला, करनाल और मुल्तान (पाकिस्तान) आदि की विशेषताओं का वर्णन भी इस गीत में मिलता है। उदाहरण के रूप में पटियाला के प्रसिद्ध रेशमी नाड़े तथा मुल्तान के पहलवानों तथा उनकी खुराक के बारे में वर्णन किया गया है जिससे कि वे बहुत ताकतवर हैं। इसके अतिरिक्त आम के पेड़ की खूबसूरती की तुलना पंजाब की जट्टियों (औरतों) से की गई है। और इस गीत में पंजाब की मीठी बोली की अत्यधिक सराहना करते हुए महत्व दिया गया है।

1. जिंद माई बाज तेरे कुम्लाईयां
तेरियाँ लाडलियाँ परजाईयाँ
बे बागी फेर कदे न आईयाँ
वे इक पल बह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

2. जिंद माई जे चल्यों पटियाले
ओत्थो लियांवीं रेशमी नाले
वे अद्दे चिट्टे ते अद्दे काले
वे गल्ला करनी की दुनिया वाले
वे इक पल वह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

3. जिंद माई अम्बियाँ नू लग गया बूर
वे जप्पीया दे मुखड़ा ते वरदा नूर
जिनू वेखके चढ़े सरूर
वे ईक पल बह जाणा....

4. जिंद माई जे चल्यो मुल्तान,
ओथे वड़े-वड़े पहलवान
वे मारण मुक्की ते, मारण मुक्की ते कढढन जाण
वे खादे गिरियां ते बदाम
वे इक पल बह जाणा मेरे...

टिप्पणी

5. जिद माई जट्टिया खेत वल आईयाँ
नक कोका कन्नी बलियाँ पाईयाँ
अँखियाँ कजले दे नाल सजाईयाँ
इक पल बह जाणा मेरे मखना
तेरे बाजो वेहड़ा सखना

6. जिंद माही जे चली यूं परदेस
का देवी पूल्ली ना अपना देस
के अपनी बोली ते अपना वेस
इक पल बह जाणा मेरे चंदा
वी छोड़ा दो दिलां दा मंदा

स्वरलिपि

ताल - कहरवा (8 मात्रा)

प्रारम्भिक संगीत हारमोनियम पर

1	2	3	4	5	6	7	8
ग	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	रें	ध	–	सं	–
गं	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	–	–	–	–	–
X				0			

पूरा टूकड़ा दो बार

1	2	3	4	5	6	7	8
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
			वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	कु	म
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
ला	ई	आं	वे	ते	री	यां	ऽ

सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	ते	री	यां	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	प	र
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
जा	ई	यां	वे	बा	ऽ	न	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
फे	ऽ	र	क	दे	ऽ	न	ऽ
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
आ	ई	यां	वे	इ	क	प	ल
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ब	ह	जा	ऽ	णा	ऽ	मे	रे
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
को	ऽ	ल	वे	ते	ऽ	रे	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	गं	रें	–
मि	ठ	डे	ने	ल	ग	दे	ऽ
ध	सं	–	–	–	सं	गं	रें
बो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ओ	ऽ
सं	–	गं	रें	सं	–	गं	रे
ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				0			

शेष अन्तरे इसी प्रकार हारमोनियम के piece के साथ बारी-बारी इसी स्वरलिपि के आधार पर गाए जाऐंगे।

पाठगत प्रश्न 6.3

सही प्रश्न चुनिए।

1. दिए हुए पंजाबी लोकगीत का नाम

   (i) जिंदुआ (ii) सारीगान (iii) भांगड़ा

2. इस गीत में पंजाबी युवतियों की तुलना किस के साथ की गयी है।

   (i) फूल (ii) आम का पेड़ (iii) मछली

3. इस गीत में किसकी प्रशंसा करते हुए उसे महत्व दिखा गया है।

   (i) पंजाबी खाना (ii) पंजाबी वस्त्र (iii) पंजाबी भाषा

टिप्पणी

(घ)

बंगाली लोक गीत

सारीगान

सारी गान बंगाल में प्रचलित लोक गीतों में से एक है, जिसे पश्चिम बंगाल एवं बंगलादेश में भी गाया जाता है। यह तेज़ लय में गाया जाने वाला गीत है, जो अधिकतर नाविकों द्वारा नौका दौड़ के समय गाया जाता है। प्रस्तुत गीत दादरा ताल में बद्ध है। इसके साथ दो-तारा तथा तबला वाद्यों का प्रयोग होता है। इस गीत में जो नाविकों का प्रमुख माझी है, वह अन्य नाविकों को नौका जल्दी चलाने के लिये प्रेरित कर रहा है।

स्थायी

रुपसी नोदीर नाव

सुजान माझीर नाव

तरतराइया जाय हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

अंतरा

आरे हेइ समालों हेइयो

आरे तागोद दिया बाइयो

फूलमोतीर केरामोती उईड़ा देखाइयो, हायरे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

संचारी

बुड़ा मियांर बेटा रे भाई, काइला चाचार लाती

जान दिया बाइयो रे मोन फूइल्ला बुकेर छाती।।

आभोग

आरे बोइठा मारो हेइयो

आरे शक्तो हाते बाइयो

मयनामोती उजान गांगे शन-शनाइया जाय, हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

टिप्पणी

सारी गान (बंगाल)

स्वरलिपि ताल – दद्रा (6 मात्रा)

स्थायी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
रू	प	सी	नो	दी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
सु	जा	न	मा	झी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	नि	नि	ध	–	प	म	म	ग
त	र	त	रा	इ	या	जा	ऽ	य	हा	य	रे
सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	प	प	ध
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	रे

अंतरा

X			0			X			0		
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	प	–	ध
हे	इ	सा	मा	लो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	–	–	–	–
ता	गो	द	दि	या	ऽ	बाइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	–	रें	सां	सां	सां	नि	नि	सां	नि	ध	प
फू	ऽ	ल	मो	ती	र	के	रा	ऽ	मो	ती	ऽ
प	प	प	नि	ध	–	प	प	म	म	ग	रे
उ	इ	ड़ा	ऽ	दे	ऽ	खा	इ	यो	हा	य	रे

टिप्पणी

सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	–	–	–
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	प	प	सा	सा	सा	सा	प	प
बु	ड़ा	ऽ	मि	यां	र	बे	टा	ऽ	रे	भा	ई
सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	–	–	–
का	इ	ला	चा	चा	र	ला	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	प	प	नि	ध	ध	प	म	ग	ग
जा	ऽ	न	दि	या	ऽ	बा	इ	यो	रे	मो	न
सा	सा	सा	रे	ग	ग	रे	सा	–			
फू	इ	ला	बु	के	र	छा	ती	ऽ			

आभोग

X			0			X			0		
									प	–	ध
									आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	–	–	–
बो	इ	ठा	मा	रो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार अन्तरे की तरह गाये जाएंगे।

पाठगत प्रश्न 6.4

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. सारी गान ..... तथा ..... का एक प्रचलित लोकगीत है।
2. सारी गान ..... गति में गाया जाता है।
3. सारी गान में ..... तथा ..... का संगति वाद्य के रूप में प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ङ)

लोकगीत (छत्तीसगढ़)

इस गीत के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है। गीत का गायन कोई व्यक्ति विशेष नहीं करता बल्कि कोई भी जाति के स्त्री या पुरुष समूह में गाते हैं। इस गीत को छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व से ही गाया जाता रहा है। इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने में वहाँ की नदियाँ, पहाड़ खेत, खलिहानों का विशेष वर्णन है तथा कुछ मुख्य जिलों का वर्णन है। उक्त बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

स्थायी

अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार
इन्द्रावती हा पखारे तोर पईयाँ
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
महुं बिनती करनवा तोरे भुईयां

1. सोहे बिंदिया सही घाटे डोंगरी पहाड़
चंदा सूरूजै बनै तोर नैना
सोनहा धान से अंग लुगरा हरियर हे रंग
तोरे बोली हावै सुघर नैना
अचरा तोरे डोलावै पुरवइया
महुं पांव पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां

2. रइगढ़ हावे सुहार तोरे मंऊरे मुकुट
सरगुजा अऊ बिलासपुर हे बैहा
रइपुर कनिहा सही घाटे सुघर हवे
दुरूग बस्तर सोहे पैजनिया
नांदेगावे नवागढ़ धनिया
महुं पावे पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हों छत्तीसगढ़ भुईयां

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी **ताल : रूपक**

(7 मात्रा)

X			2		3	
			ध़	सा	सा	–
			अ	र	पा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
पै	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	के
रे	सा	–	ध़	सा	सा	–
धा	ऽ	र	म	ऽ	हा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
न	हो	ऽ	हे	ऽ	ऽ	अ
रे	सा	सा	ग	–	प	–
पा	ऽ	र	इं	ऽ	न्द्रा	ऽ
ध	ध	–	ध	–	–	ध
व	ती	ऽ	हा	ऽ	ऽ	प
<u>नि</u>	ध	–	प	ग	<u>नि</u>	ध
खा	रे	ऽ	तो	ऽ	ऽ	रे

X			2		3	
प	<u>नि</u>	ध	प	–	म	ग
पै	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
रे	सा	–	सा	–	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भुं	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
सा	–	रे		–	प	–	–
म	ऽ	हुं		ऽ	बि	न	ऽ
म	प	ध		प	–	म	ग
ती	ऽ	ऽ		क	रं	व	ऽ
–	रे	–		ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे		ऽ	भु	ई	ऽ
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-1

				ग	प	प	–
				सो	ऽ	हे	ऽ
ध	सां	–		सां	–	–	नि
बिं	दि	ऽ		या	ऽ	ऽ	स
X				2		3	
ध	प	–		ग	–	प	–
ही	ऽ	ऽ		घा	ऽ	ट	ऽ
ध	नि	–		ध	–	–	प
डों	ग	ऽ		री	ऽ	ऽ	प

टिप्पणी

प	–	–		ग	–		प	–
हा	ऽ	ड़		चं	ऽ		दा	ऽ
ध	ध	–		ध	–		–	ध
सू	रु	ऽ		जै	ऽ		ऽ	ब
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
नैऽ	ऽऽ	ऽ		तो	ऽ		ऽ	रे
प	ध	–		प	–		म	ग
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
ऽ	ऽ	ऽ		सो	न		हा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
धा	ऽ	ऽ		न	ऽ		ऽ	से
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
अं	ग	ऽ		लु	ग		रा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
ह	रि	ऽ		य	र		हे	ऽ
रे	सा	सा		ग	–		प	–
रं	ग	–		तो	ऽ		रे	ऽ
X				2			3	
ध	–	–		ध	–		–	ध
बो	ऽ	ऽ		ली	ऽ		ऽ	हा
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
वेऽ	ऽऽ	ऽ		सु	ऽ		घ	र
प	ध	–		प	–		–	–
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ

टिप्पणी

ग	प	प	–	ध	सा	–	
अ	च	रा	ऽ	तो	ऽ	ऽ	
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–	
रे	ऽ	ऽ	डोऽ	ला	व	य	
ध	–	प	–	प	नि	ध	
पु	ऽ	र	ऽ	व	ई	ऽ	
प	–	म	म	ग	रे	सा	
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	–	रे	–	प	–	–	
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	
प	ध	–	–	प	म	ग	
व	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ	
–	रे	–	ग	–	रे	–	
तो	ऽ	रे	ऽ	भु	ई	ऽ	
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-2

X			2		3		
			ग	प	प	–	
			र	इ	ग	ढ़	
ध	सां	–	सां	–	–	नि	
हा	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	सु	
ध	प	–	ग	–	प	–	
घ	र	ऽ	तो	ऽ	रे	ऽ	

टिप्पणी

ध	नि	–	ध	–	–	प	
म	ऊं	ऽ	रे	ऽ	ऽ	मु	
प	–	–	ग	–	प	–	
कु	ट	ऽ	स	र	गु	ऽ	
ध	ध	–	ध	–	–	ध	
जा	ऽ	ऽ	अऊ	ऽ	ऽ	बि	
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि	
लाऽ	सऽ	ऽ	पु	र	हे	ऽ	
प	ध	–	प	–	म	ग	
बै	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	
रे	सा	सा					
ऽ	ऽ	ऽ					
X			2		3		
1	2	3	4	5	6	7	
			ध़	सा	सा	–	
			र	इ	पु	र	
X			2		3		
रे	म	–	म	–	–	ग	
क	नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	स	
रे	सा	–	ध	सा	सा	–	
ही	ऽ	ऽ	घा	ऽ	ट	ऽ	
रे	म	–	म	–	–	ग	
सु	ऽ	ऽ	घर	ऽ	ऽ	हा	
रे	सा	सा	ग	–	प	–	
वे	ऽ	ऽ	दु	ऽ	रु	ग	

टिप्पणी

ध	–	–	ध	–	–	ध
ब	ऽ	स्	तर	ऽ	ऽ	सो
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि
हेऽ	ऽऽ	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	–	–	–
ज	नि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	प	–	ध	सां	–
नां	ऽ	दे	ऽ	गां	ऽ	ऽ
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–
वे	ऽ	ऽ	नऽ	वा	ऽ	ऽ
ध	–	प	–	प	नि	ध
ग	ऽ	ढ़	ऽ	ध	नि	ऽ
प	–	म	म	ग	रे	सा
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			2		3	
सा	–	रे	–	प	–	–
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ
प	ध	–	–	प	म	ग
वे	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ
–	रे	–	ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे	ऽ	भुं	ई	ऽ
–	सा	–	सा	–	रे	–
यां	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भु	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 6.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ''अपरा पैरी के धार'' गीत के उद्देश्य को संक्षेप में लिखिए।
2. दिए हुए छत्तिसगढ़ के लोकगीत की पार्श्वभूमि को संक्षेप में लिखिए।
3. इस लोक गीत को कौन गाता है?

(च)

राजस्थानी लोकगीत

यह राजस्थानी लोकगीत है। यह गीत प्रायः कालबेलियों के द्वारा पारम्परिक मेलों में गाया जाता है। यह राजस्थान के प्रचलित लोकगीतों में से एक गीत है। नाग पंचमी, वीर पुरी तथा गोगा नवमी पर भी यह गीत गाया जाता है। गीत के साथ नृत्य भी किया जाता है। यह एक श्रृंगार रस गीत है। राजस्थान के हर शहर व गांवों में इसका प्रचार प्रसार है।

यह गीत प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीनकाल में राजा महाराजा इसे अपने मनोरंजन के लिए सुना करते थे। तथा आज भी यह नई पीढ़ी के लिए मनोरंजन का प्रतीक है।

कालबेलिया हिन्दुओं के सभी तीज त्यौहार और मेले मनाते हैं। यह गीत विशेष तौर पर मेले में गाया जाता है। यह गीत पूरे भारत तथा देश-विदेशों में प्रचलित है। प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

सोने री धरती जठै चाँदी रो आसमान
रंग रंगीलो रस भरीयो म्हारो प्यारो राजस्थान।

स्थायी

अररररररर.........र

रे कालियो कूद पड़ियो मेला में,
साइकल पन्चर कर लायो
अरररररर.........र

1. जयपुर जाइजे कबजो लाइजे,
कबजो लाल बूटी को...
अरररररर.........र

2. दो दिन डब जा रे डोकरिया
छोरी म्हारी बाजरियो काटे
अरररररर.........र

टिप्पणी

3. रे घोडी छप्परे मे छुप जा रे,
छोरी तनै लेबाणो आयो।
अरररररर.....र

4. रे काजल टीकी के नखरे में,
छोरी म्हारी मर मत जाइजे रे,
अरररररर.....र

5. रे छोरी झटक मटक मत चाल
कमर में लचको पड़ जासी
अरररररर.....र

रे कालियो कूद पड़ियो मेला में....
साइकल पन्चर कर लायो.....
अरररररर.....र

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

(8 मात्रा)

गंगं	गं	रें रें रें	गं – – गंगं	पं गं पं गं	रे –	गं रें गं रें निध निध प
सोने	री	ऽ ध र	ती ऽ जठे चांदी	रो ऽ ऽ ऽ	आस्	मा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ न
रेंरें	रें –	रें नि	रें रें – सं	– सं –		गं रं सां
रंग	रंगीले	ऽ ऽ	रस भरी	म्हारो थारो		रा जा स्थान

स्वरलिपि

स्थायी

X				0				X				0			
सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	सां
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	क	ऽ	लि	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	–	ध	प	–	–	–
कू	ऽ	ऽ	द	प	ऽ	डि	ऽ	यो	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ

X				0				X				0			
प	–	–	–	–	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	साऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ल
ध	–	–	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	ध	–	–	–
पन्	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽ	र	ऽ	क	र	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ

सभी अंतरों की स्वरलिपि स्थायी के समान है।

पाठगत प्रश्न 6.6

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. यह गीत ..... के प्रचालते लोकगीतों में से एक है।
2. इस गीत के साथ ..... भी किया जाता है और यह ..... रस का गति है।
3. यह गीत विशेष रूप से ..... में गाया जाता है।

आपने क्या सीखा

1. इस लोकगीत के पाठ में जनसाधारण तथा जनजाति के लोगों की शैली तथा पृष्ठ भूमि को बताया है।
2. गढ़वाली लोक गीत उत्तरांचल के मेलों तथा पर्वों में गाए जाते हैं।
3. दिया हुआ हरियाणवी लोकगीत हर मौसम तथा अवसर पर गाया जाता है।
4. यह गीत ''जिंदुआ'' के नाम से प्रचलित है।
5. सारीगान, बंगाल तथा बंगलादेश का एक प्रचलित लोकगीत है।
6. छत्तीसगढ़ के लोकगीत का विषय छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है।
7. राजस्थान का लोकगीत प्राय: पारम्परिक मेलों में गाया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. गढ़वाली लोक-गीत की पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

2. हरियाणा के लोकगीत की आठ पंक्तियाँ लिखिए।
3. पंजाब के लोक गीत ''जिंदुआ'' का उद्देश्य समझाईए।
4. ''सारीगाना'' की पृष्ठ भूमि को लिखिए तथा संगति के वाद्यों के नाम लिखिए।
5. छत्तीसगढ़ तथा राजस्थान लोकगीतों की तीन विशेषताओं को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. मेले, पर्व
2. युवक, युवती
3. तुकबंदी

6.2

1. ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए, तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बारबार भी दी जाए, तो वह उसे ठीक से नहीं अपनाता है।
2. हर मौसम तथा हर उत्सव पर
3. सामाजिक तथा शिक्षाप्रद गीत

6.3

1. (i) जिंदुआ
2. (ii) आग का पेड़
3. (iii) पंजाबी भाषा

6.4

1. पश्चिम बंगाल, बंगलादेश
2. द्रुत
3. दोतारा तबला

6.5

1. छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान किया गया है।

टिप्पणी

2. इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने वहाँ की नदियां पहाड़, खेत खलिहानों का विशेष वर्णन है, तथा कुछ मुख्य जिलां का वर्णन है।

3. इस लोक गीत को किसी भी जाति के स्त्री या पुरुष, समूह में गाते हैं।

6.6

1. राजस्थान

2. नृत्य, श्रृंगार

3. मेले में

7

राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान

'वंदेमातरम्' 1882 में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया भारत का राष्ट्रीय गीत है। मूलत: यह बांग्ला एवं संस्कृत दो भाषाओं में था। राष्ट्रीयगीत किसी भी राष्ट्रीय अवसार पर गाया जाता है। इस गीत ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया। सर्वप्रथम इसे 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक राजनैतिक सभा में गाया गया। कुछ आधिकारिक निर्देशों को छोड़कर इस गीत का दर्जा राष्ट्र गान के समान है। 'वंदेमातरम्' का नारा देश की स्वतंत्रता के संघर्ष के समय राष्ट्रीय आंदोलकारियों व नेताओं का मूल मंत्र था। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास आनन्द मठ' में यह रचना उल्लेखित है।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान की पृष्ठ भूमि का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के बोलों का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगान गाते समय उसके नियमों का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगान को उचित लय और ताल में गा पायेंगे।

''वंदेमातरम्''

शब्दकार–बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्!!
सुजलां सुफलां, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्; वन्दे मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्ल-कुसुमितां-द्रुम-दल शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!!

टिप्पणी

वन्दे मातरम्

ताल–कहरवा

स्थायी

x		0		x		0		x		0		x		0	
सा	रे	–म	पम	प	–	–	–	म	प	–नि	सांनि	सांसां	–	–	–
व	न्दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	व	न्दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ
सारें	निऽ	धप	–प	पध	म	गरे	–रे	रेप	मम	गरे	–ग	सा	–	–	–सा
सुज	लाऽ	ऽऽ	ऽम	सुफ	ला	ऽऽ	ऽम्	मल	यज	शीऽ	ऽत	ला	ऽ	ऽ	ऽम
सा	रेम	पम	प	–प	निध	प	–	म	प	–नि	सांनि	सां	–	–	–
श	स्यश्या	ऽम्	लां	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	वं	दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

x		0		x		0		x		0		x		0	
म	प	नि	नि	निनि	सांनि	सां	–नि	सां	–	नि	निनि	संनि	सां	सारें	सानि
शु	भ्र	ज्यो	त्स्ना	पुल	कित	या	ऽमि	नीम्	ऽ	फु	ल्लकु	सुमि	त	द्रुम	दल
	सां	ध													
निध	निध	प	–	रेरे	मग	रे	–	रेनि	धनि	धप	–ध	प	–	मप	नि
शोऽ	ऽभि	नीम्	ऽ	सुहा	ऽसि	नीम्	ऽ	सुम	धुर	भाऽ	ऽष	णीम्	ऽ	सुख	दां
निनि	नि	–नि	सांनि	सां	–	म	प	–नि	सांनि	सां	–	–	–	म	प
वर	दां	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	वं	दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	वं	दे
–नि	सांनि	सां	–	–	–										
ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ!!										

पाठगत प्रश्न 7.1

1. वंदेमातरम ..... गान है।
2. राष्ट्रगान दो भाषाओं में पाए जाते हैं ..... तथा ..... ।
3. वंदेमातरम गीत भारतीय स्वतंत्रता को ..... किया। सर्व प्रथम ..... कांग्रेस की सभा में गाया गया।

राष्ट्रगान

(जन गण मन अधिनायक)

भारत का राष्ट्रगान भारतीयों द्वारा विशिष्ट अवसरों पर गाया जाता है। राष्ट्रगान के प्रारंभ में 'जन गण मन' एवं अंत में 'जय हे' गाया जाता है। राष्ट्रगान की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने संस्कृत मिश्रित बंगाली में की है। राष्ट्रगान के बोल तथा संगीत दोनों ही सन् 1911 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने तैयार किये। संविधान सभा में जन गण मन के पहले छंद को 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया है।

जन गण मन अधिनायक जय हे

–रवीन्द्र नाथ टैगौर

भारत भाग्य विधाता
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक, जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे।।

टिप्पणी

''जन गण मन अधिनायक''

ताल-कहरवा

स्थायी

x				x				x				x			
								सा				ग			
सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	रे	ग	म	–
ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
म								सा							
ग	–	ग	ग	रे	–	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	सा	–
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
सा										प	मं			ध	
प	–	प	प	–	प	प	प	प	–	प	मं	प	मं	प	–
जा	ऽ	ब	सि	ऽ	न्धु	गु	ज	रा	ऽ	त	म	रा	ऽ	ठा	ऽ
								ग							
म	–	म	म	म	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
द्रा	ऽ	वि	ड़	उ	ऽ	त्क	ल	बं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा								रे				प			
ग	–	ग	ग	ग	–	ग	रे	प	प	प	म	म	–	म	–
वि	ऽ	न्ध्य	हि.	मा	ऽ	च	ल	य	मु	ना	ऽ	गं	ऽ	गा	ऽ
				ग				सा							
ग	–	ग	ग	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	–	–
उ	ऽ	च्छ	ल	ज	ल	धि	त	रं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
								म							
ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	म	रे	ग	म	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	ना	ऽ	में	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मं				म				म							
ग	म	प	प	प	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	आ	ऽ	शि	श	मा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

x				x				x				x			
सा								रे							
ग	–	ग	–	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	–	–
गा	ऽ	हे	ऽ	त	व	ज	य	गा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा												प		ध	
प	प	प	प	प	–	प	म	प	–	प	प	म॑	ध	प	–
ज	न	ग	ण	मं	ऽ	ग	ल	दा	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
				ग				ग							
म	–	म	म	म	–	ग	गम	रे	म	ग	–	–	–	नि	नि
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	विऽ	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
दि								ध							
सां	–	–	–	–	–	नि	ध	नि	–	–	–	–	–	प,	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
ध	–	–	–	–	–	–	–	सा	सा	रे	रे	ग	ग	रे	ग
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ज	य	ज	य	ज	ज
म	–	–	–	–	–	–	–								
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

पाठगत प्रश्न 7.2

1. राष्ट्रगान के आरम्भिक स्वरों को लिखिए।
2. राष्ट्रगान के रचयिता कौन थे?
3. कविता में कौन-सा पद संविधान में राष्ट्रगीत के लिए चुना गया है?

आपने क्या सीखा

1. ''वन्दे मातरम्'' भारत का राष्ट्रगीत है, जिसे बंकिमचंद्र चटोपाध्याय ने लिखा है।
2. राष्ट्रगीत को किसी भी राष्ट्रीय अवसर पर गाया जाता है।
3. स्वतंत्रता संग्राम के लिए जूड़ाने वाले क्रांतिकारी एवं नेत्तत्व करने वाले नेताओं के लिए ''वन्देमातरम्'' एक मन्त्र है।
4. ''जन गण मन'', भारत का राष्ट्रगान है।
5. राष्ट्रगान की रचना कवि रविंद्रनाथ टैगोर ने संस्कृत मिश्रित बंगाली में रचना की है।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. राष्ट्रगीत की पार्श्वभूमि का उद्देश्य लिखिए।
2. राष्ट्रगान के विषय में संक्षेप में लिखिए।
3. राष्ट्रगान के पद को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. राष्ट्रगीत
2. बंगाली, संस्कृत
3. प्रेरित, राष्ट्रीय

7.2

1. जन गण मन
2. कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर
3. प्रथम पद

हिंदुस्तानी संगीत का पाठ्यक्रम (242)

माध्यमिक स्तर

प्राचीन काल से संगीत प्रसन्नता, दु:ख, विश्रांति आदि विभिन्न मनोदशाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कला के अन्य स्वरूपों की तुलना में संगीत सबसे प्राकृतिक और सहज स्वाभाविक माध्यम है क्योंकि यह प्राण अथवा आत्मा से संबंधित है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में संगीत भारतीय मानस से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह जीवन के प्रत्येक पहलू और मानव-समाज में गहराई से संबद्ध है। सारे ब्रह्मांड में व्याप्त नाद और लय के साथ मनुष्य का एक प्राकृतिक जुड़ाव है क्योंकि यही संगीत के मूल तत्वों के स्वरूप हैं। यही मुख्य कारण है कि वेदों और प्रमुख रूप से सामवेद में मंत्रों के उच्चारण के लिए संगीत को सर्वोत्तम माध्यम माना गया है।

उद्देश्य

यह संगीत का कोर्स हिंदुस्तानी संगीत के सिद्धांत और प्रयोगात्मक ज्ञान को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करता है।

इस कोर्स का अध्ययन करने के बाद शिक्षार्थी इस योग्य होंगे कि वे–

- भारतीय संगीत के विभिन्न तकनीकी शब्दों के इतिहास के बारे में बता सकेंगे;
- निर्धारित तकनीकी शब्दों को परिभाषित कर सकेंगे;
- निर्धारित राग एवं तालों की पहचान कर सकेंगे;
- निर्धारित राग/ताल के संयोजन और उनके स्वरूपों की प्रस्तुति कर पाएंगे; तथा
- किसी भी बंदिश की स्वरलिपि लिख सकेंगे।

प्रस्तुति विधि (Delivery Method)

इस कोर्स को मुद्रित सामग्री के साथ ऑडियो कैसेट या सीडी के द्वारा प्रदान किया गया है।

समय गठन (Time Frame)

यह एक शैक्षिक कोर्स है। यह कोर्स एक वर्ष का होगा जिसे पांच वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। इसका अर्थ है कि इस कोर्स को एक वर्ष में पूरा किया जा सकता है लेकिन मुक्त शिक्षण विधि इस कोर्स को पांच वर्ष में पूरा करने की सहूलियत अथवा लचीलापन भी प्रदान करती है।

परीक्षा की विधि

संपूर्ण अंक : 100

थ्योरी : 40 अंक तथा प्रायोगिक : 60 अंक

कोर्स संरचना

न्यूनतम अध्ययन के घंटे और थ्योरी और प्रायोगिक परीक्षा के प्रत्येक मॉड्यूल में निर्दिष्ट अंक निम्न प्रकार हैं–

मॉड्यूल सं.	मॉड्यूल का नाम	न्यूनतम अध्ययन के घंटे	अंक
सिद्धांत			
I.	जनरल संगीत-शास्त्र	48	20
II.	हिंदुस्तानी संगीत (प्राचीन एवं मध्यकालीन)	36	10
III.	हिंदुस्तानी संगीत के प्रणेता	36	10
प्रायोगिक			
IV.	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत	35	30
V.	ताल एवं अलंकार	45	15
VI.	सुगम संगीत	40	15
	कुल	240	100

अध्ययन विधि

प्रायोगिक

3 घंटे अंक : 60

मॉड्यूल-4 हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत अंक : 30

प्रस्ताव हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न तत्व है। संगीत शास्त्रियों ने वर्तमान हिंदुस्तानी संगीत के विकास में प्रत्येक स्तर पर महान योगदान दिया है और इसे शानदार ऊंचाई दी है। हिंदुस्तानी संगीत ने विश्व में आदर, मान्यता और प्रतिष्ठा पाई है। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं :-

पाठ-1 द्रुत ख्याल : कोई तीन (राग-यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल और काफी)

पाठ-2 ध्रुपद : कोई एक (राग-यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल और काफी)

मॉड्यूल-5 ताल और अलंकार का प्रस्तुतिकरण अंक : 15

प्रस्ताव भारतीय संगीत के प्रणेताओं द्वारा एक महत्वपूर्ण अवधारणा की खोज **ताल** है। एक निश्चित अंतराल के साथ संगीत में बंदिशें एक निश्चित ताल और मात्रा के साथ लयबद्ध की जाती हैं। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं :-

पाठ-3 निम्नलिखित ठेकों का खाली, ताली आदि के साथ वाचन

(तीन ताल, कहरवा, दादरा, झपताल और एकताल)

पाठ-4 अलंकार : शिक्षार्थी कैसेट से कोई पांच अलंकारों का या कोई अन्य पांच अलंकारों का गायन कर सकता है।

मॉड्यूल-6 हिंदुस्तानी सुगम संगीत

अंक-15

प्रस्ताव भारत में लोगों के सामाजिक जीवन में हिंदुस्तानी सुगम संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोक गीत लाखों ग्रामीणों की मूल्यवान परंपरा है। यह श्रमिकों को असीम आनंद प्रदान करते हैं। विभिन्न भाषाओं में देशभक्ति के गीत प्रेरणा प्रदान करते हैं और समाज में एकता का निर्माण करते हैं। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं.....

पाठ-5 राष्ट्र-गान/राष्ट्रीय गीत (शिक्षार्थी राष्ट्र गान और राष्ट्रीय गीतों को गाने में समर्थ होंगे।)

पाठ-6 देशभक्ति गीत-दो (शिक्षार्थी कैसेट/सीडी में दिए गीत अथवा अन्य देशभक्ति के गीत गा सकेंगे।)

पाठ-7 लोकगीत - दो (शिक्षार्थी सी.डी. से दो लोकगीत या अन्य दो लोकगीत गा सकेंगे।)

नोट : इस कोर्स के लिए सी.डी. एनआईओएस द्वारा प्रदान की जाती हैं।

मूल्यांकन पद्धति

मूल्यांकन विधि	घंटों के समय	मॉड्यूल के अनुसार अंकों का वितरण	कुल अंक
थ्योरी (मॉड्यूल-I, II और III)	2 घंटे		40
प्रयोगात्मक (मॉड्यूल : 4, 5 और 6)	3 घंटे		60